फरवरी 2006
Rs. 13 /-
चन्दामामा
इस अंक में
देखिए जी-मेन के
कारनामे
G-man

सुनो देवताओं का तूर्यनाद
सिमलीपाल भगवान के प्राचीनतम सृजनों का साम्राज्य है। वनप्रदेशों, मेघाच्छन्न शिखरों, जल-प्रपातों व नदियों के भूपरिदृश्य में आप जन्मजात स्वच्छन्द प्राणियों का वृन्दवाद्य श्रवण करेंगे। यहाँ विशाल भारतीय हाथियों के चिंघाड़ के सुर में सुर मिलाते हैं, जंगली पक्षियों के वृन्द गान और बाघों और तेन्दुओं के गर्जन के मध्यम तान, जबकि मगरमच्छ प्रभाव के लिए घड़ियाली आँसू बहाते हैं।
सिमलीपाल में उन्हें साधुवाद देने के लिए वहाँ अवश्य जाइये, जहाँ आप सहज ही दीवाना हो जायेंगे।
mudra 1737
ORISSA
For details contact: Ph: 0674 2432177, e-mail: ortour@orissatourism.gov.in
website: www.orissatourism.gov.in
ORISSA
सुरम्य • शान्त • शानदार

A TREASURE-TROVE FOR TALENTED TOTS

चन्दामामा   सम्पुट - ५७   फरवरी २००६   सञ्चिका - २

अंतरंग

विशेष आकर्षण

एक निवेदन पाठकों से

कागज के मूल्य तथा उत्पादन व्यय में वृद्धि जैसे कुछ अपरिहार्य कारणों से इस पत्रिका की कीमत तत्काल बढ़ाने के लिए हम बाध्य हैं। फरवरी २००६ अंक से इसका मूल्य १२ रु. के स्थान पर १३ रु.होगा। हम अपने पाठकों से निवेदन करते हैं कि वे इस कम से कम वृद्धि को सहन करें। वार्षिक चन्दा १५० रु.होगा। आशा करते हैं कि आप सब में से बहुत इस छूट से लाभ उठायेंगे।

- प्रकाशक

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

चरित्र का प्रश्न

भारत के तीस से कुछ अधिक राज्यों में से पाँच राज्यों में विधान सभाओं के लिए आगामी मई में आम चुनाव होनेवाले हैं। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। जबसे हमलोगों ने अपना बनाया संविधान लागू किया है, तब से हमलोग संसद तथा विधान सभाओं में अपने प्रतिनिधियों को अपने शासक के रूप में भेजने के लिए नियत समय पर चुनाव कराते आ रहे हैं। स्वाभाविक ही, आशा की जाती है कि वे देश केसबसे अधिक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे।

कहा जाता है, अधिकार व्यक्ति को भ्रष्ट कर देता है और परम अधिकार पूर्णतया भ्रष्ट कर देता है। चुनाव, जो लोकतंत्र का सुदृढ़ आधार है, हाल से, धन बल और बाहु बल दिखाने का अवसर बन गया है

युगों पहले एक प्राचीन ग्रंथ विष्णु पुराण में लिखा था, "भारत धरती का महानतम देश है...बहुत पुण्य अर्जित करने के बाद ही व्यक्ति को इस देश में मनुष्य के रूप में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त होता है।" इसलिए, ऐसे महान देश को कलंकित करना किसी भारतीय को शोभा नहीं देता।

फिर भी, अपने को सुधारने में बुहत देर नहीं हुई है। सर्वप्रथम, हम अपने प्रतिनिधि उन्हीं स्त्री-पुरुषों को चुनें जो चरित्रवान हों, जो ईमानदारी तथा विनम्रता जैसे महान मानव मूल्यों का पालन करते हों और जो देश की समृद्ध परम्परा और धरोहर को कायम रख सकेंगे।

चन्दामामा को बढ़ती पीढ़ी में पूर्ण विश्वास है कि वह देश की खोई प्रतिष्ठा को पुनः अर्जित कर लेगी।

सम्पादक : विश्वम

पाठकों का पन्ना

पुणे से मनीशा शेठ गुटमन लिखती हैं :

चन्दामामा मेरे बचपन का जीवन्त भाग है। मेरे पिता संस्कृत संस्करण पढ़ा करते थे। जहाँ तक चित्रों का प्रश्न है, पत्रिका में विविध और व्यापक स्रोतों से सामग्री ग्रहण करने की विशेषता है जो मुझे बहुत पसन्द है। शायद चित्रों में थोड़ी कम विविधता हो तो पत्रिका के कुल रूपरंग में अधिक सामंजस्य आ जाये। पत्रिका में जो सबसे अधिक मुझे पसन्द है वह है व्यापक फैलाव और यह तथ्य कि शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के बच्चे समान रुचि के साथ इसे पढ़ सकते हैं।

विद्या बगलोदी शारजाह, यू.ए.ई.से लिखती हैं :

मुझे जुलाई अंक का सम्पादकीय लेख बहुत अच्छा लगा। बच्चों को यंत्र - मानव नहीं बनने देना चाहिये। यह बिलकुल सत्य है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली कैसी है, इस विचार से मैं पूर्णतया सहमत हूँ। हमलोग जितना याद रखते हैं छोटे बच्चे उतना नहीं कर सकते, क्योंकि खेलने-कूदने की आयु में उन पर पढ़ाई बलपूर्वक लादी जाती है। एक चीज पर मैं जोर डालना चाहती हूँ: हम अभिभावकों को सोचना है कि क्या हम यह चाहते हैं कि हमारे बच्चे ज्ञान अर्जित करें या एक कागज़ का टुकड़ा (प्रमाण पत्र) पाने के लिए अधिक अंक अर्जित करें जिसे लेकर मैच अप और कैच अप करके जिन्दगी के रैट रेस में शामिल हो सकें।

अरफान रहमान, स्वाजिलैण्ड, अफ्रिका से लिखते हैं :

आप की पत्रिका की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह हमें भारत और इ सकी संस्कृति के बारे में बताती है। हमलोग क्योंकि अपने देश से बहुत दूर रहते हैं, इन सबके बारे में पढ़ना बहुत अच्छा लगता है।

कान्तालक्ष्मी चन्द्रमौली, चेन्नई से लिखती हैं :

बड़ौदा से यात्रा करते समय मेरे सहयात्री-दादा, पिता, माँ तथा दो नटखट बच्चे- कह रहे थे कि हमलोग सब दादा-दादी को मिलाकर बूढ़े-बच्चे चन्दामामा हमेशा पढ़ते हैं, जिससे वे भारतीय संस्कृति और मूल्यों के बारे में कहानियाँ बच्चों को बता सकें। यह संक्षेप में चन्दामामा की सफलता की कहानी है।

परिवर्तित मन

गणपति वर्मा गिरिपुर राज्य का राजा था। उस राज्य के रामवर नामक एक छोटे शहर में रमण कपड़ों का व्यापारी था। उसके परिवार के सदस्य थे, उसकी पत्नी, एक बेटा और दो बेटियाँ। बेटे का नाम धनशेखर था और बेटियों के नाम थे, शांतामणि व चिंतामणि। रमण की बड़ी इच्छा थी कि बड़ी बेटी की शादी राजधानी में नौकरी पर लगे किसी योग्य युवक से करूँ।

हाल ही में, रमण ने एक रिश्ते के बारे में सुना। वह युवक राजधानी में राजा के खज़ाने का पहरेदार है। उसका नाम दिवाकर है और सुंदर भी है। बहुत अक़्लमंद और साहसी भी। रमण को मालूम हुआ कि वह राजधानी के बाहर की किसी सुंदर कन्या से शादी करना चाहता है।

रमण राजधानी गया, दो-तीन दिन वहीं रहा और दिवाकर के बारे में जानकारी प्राप्त की। फिर स्वयं उससे मिला और उसकी नौकरी के बारे में पूरे विवरण जाने। उसकी बोलचाल की प द्धति उसे बहुत अच्छी लगी। उसने उसे अपनी बेटी के बारे में बताया और कहा कि यह रिश्ता अगर तुम्हें पसंद हो तो रामवर आकर कन्या को देख लेना।

एक सप्ताह के बाद दिवाकर रामवर आया। जब वह रमण के घर के निकट पहुँचा, तब उसने एक युवती को देखा, जो चौक पूर रही थी। दिवाकर को लगा कि यही रमण की बड़ी बेटी होगी। घर के अंदर आते ही रमण ने दिवाकर का स्वागत किया और एक-एक करके अपने परिवार के सदस्यों का परिचय कराया। तभी उसकी दूसरी बेटी चिंतामणि रोती हुई वहाँ आयी।

''क्या हुआ, चिंतामणि? रो क्यों रही हो?'' परेशान रमण ने पूछा।

''फलों की दुकान से लौट रही थी तो उस शरारती लच्छू ने बीच गली में सबके सामने मेरा

भवानी दास

मज़ाक उड़ाया।'' चिंतामणि ने आँसू पोंछते हुए कहा।

''बहुत नटखट और शरारती है। उसका बाप गजराज मशहूर काला चोर है। बेटी, हमेशा दुष्टों से दूर रहा करो। आख़िर अकेली फलों की दुकान पर गयी क्यों?''

''इससे बातें करना भी बेकार है। एक दिन के लिए इसे कमरे में बंद कर दें और भूखा रखें तो इसका दिमाग ठिकाने आ जायेगा।'' बगल में खडे बडे भाई धनशेखर ने बहन को नाराज़ी से देखते हुए कहा।

चिंतामणि रोती हुई वहाँ से चली गयी।

दिवाकर ने कहा, ''रमणजी, मुझे ज ाने की अनुमति दीजिये।''

''वह मेरी दूसरी बेटी है। उसे मालूम नहीं कि कहाँ और कैसे बात करनी चाहिये। क्या मेरी बड़ी बेटी आपको पसंद आयी?'' रमण ने संकोच-भरे स्वर में पूछा।

''किसी निर्णय पर आने के लिए मुझे थोड़ा-सा समय चाहिये। मुझे बहुत दूर जाना है। अंधेरा भी छा रहा है। अभी निकल पड़ना अच्छा होगा।'' यह कहता हुआ वह घर से बाहर आ गया।

जब वह बरगद के पेड़ों के पास पहुँचा तब राजधानी जानेवाली एक बैलगाडी तैयार थी। वह उसमें बैठ गया। तब तक उस गाड़ी में तीन मुसाफिर बैठे हुए थे। बैलगाड़ी चल पड़ी।

बैलगाडी जब तेज़ी से जाने लगी तब बैल के गले में बंधी कांसे की घंटियाँ बजने लगीं। अंधेरा जब और ज़्यादा छाने लगा तब गाडीवाले नेएक दीप भी जलाया और नीचे लटका दिया। एक मुसाफिर ने कहा, ''दिन में यात्रा करने का समय नहीं मिलता और रात में यात्रा करने जाओ तो चोरों का डर लगा रहता है। पर करें क्या? काम तो करना ही पडेगा न?''

दो घंटों की यात्रा के बाद बैलगाडी जंगल से बाहर आने लगी तब रास्ते के बीच एक हृष्ट-पुष्ट आदमी खडा हो गया। उसके हाथ में तलवार भी थी। गाडीवाला उसे देखकर डर के मारे कांप उठा और चिल्लाने लगा। ''काला चोर गजराज है। भागो, भाग जाओ।'' चिल्लाते हुए उसने गाडी रोक दी।

गजराज लंबे-लंबे डग भरता हुआ गाडी के पास आया और कहने लगा, ''कोई भी मुझसे

बच नहीं सकता। तुम्हारे पास जितना भी धन है, जो भी गहने हैं, निकालो।'' डरावने कंठ स्वर में उसने कहा।

गाडी में बैठे तीनों मुसाफिर जब उसके कहे अनुसार करने को तैयार हो गये, तब दिवाकर नीचे कूद पड़ा और गाडीवाले के हाथ से चाबुक छीन लिया और उसे तेज़ी से घुमाते हुए कहा, ''अरे ओ गजराज, आखिर मेरे हाथ आ गये न? कब से मैं तुम्हें ढूँढ़ रहा था। राजा ने तुम्हें पकड़ने का आदेश दिया था। और वह आदेश आज मैं अमल में ले आ रहा हूँ। चुपचाप झुक जाओ, नहीं तो तुम्हें कड़ी से कड़ी सजा दी जायेगी। भागने की कोशिश की तो जंगल में छिपे हमारे सैनिक तुम्हें मार डालेंगे। तुम्हारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके चीलों और कौओं को खिला देंगे।''

गजराज ने जब सुना कि जंगल में सैनिक हैं, तो उसका दिल कुछ क्षणों के लिए रुक-सा गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए। इस मौके का फायदा उठाकर दिवाकर उसपर टूट पड़ा और ज़ोर से उसके हाथ को दे मारा, जिससे तलवार उसके हाथ से गिर पड़ी। इतने में वे तीनों मुसाफिर भी आये, उसे पकड़ लिया और उसके हाथ-पैर बांधकर गाडी में डाल दिया।

दूसरे दिन दिवाकर, गजराज को खींचता हुआ राज दरबार में ले गया। राजा को पूरा किस्सा सुनाया। गजराज ने सिर झुकाकर अपने सारे अपराध स्वीकार किये।

राजा ने कहा, ''गजराज के अन्यायों व अत्याचारों के बारे में मैं भी बहुत दिनों से सुनता

आ रहा हूँ। जनता की शिकायतें भी मेरे कानों तक पहुँची हैं। यह जंगल भाग गया, इसलिए हम इसे पकड़ नहीं सके। दिवाकर ने इसे बंदी बनाकर साबित कर दिया कि वह बड़ा ही साहसी और पराक्रमी है। मैं हृदयपूर्वक उसका अभिनंदन करता हूँ। आज्ञा देता हूँ कि दिवाकर इसी तरह गजराज के बेटे को पकड़े और मेरे सामने पेश करे।''

कुछ सैनिकों को लेकर दिवाकर रामवर गया और गजराज के बेटे लच्छू को बड़ी चालाकी से गिरफ्तार कर लिया और उसे राजा के सामने पेश किया। राजा ने उन्हें आजीवन जेल की सज़ा दी। दिवाकर के काम से अति प्रसन्न राजा ने उसे पहरेदारों के विभाग का प्रधान बना दिया।

रमण को जब यह मालूम हुआ तब अपने होनेवाले दामाद के साहस पर बेहद खुश हुआ। उससे मिलने वह राजधानी पहुँचा। जैसे ही रमण ने दिवाकर के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा, उसने कहा, ''क्षमा कीजिये। मैं आपकी बेटी से शादी नहीं कर सकता।''

रमण ने निराश -भरे स्वर में पूछा, ''क्यों? क्या तुम्हें लडकी अच्छी नहीं लगी?''

''ऐसी कोई बात नहीं है। इसका यह कारण नहीं,'' दिवाकर ने कहा।

''तुम्हारा ओहदा बढ़ गया है, राजा के कृपा-पात्र बने हो, इसलिए क्या कोई बड़ारिश्ता ढूँढ़ रहे हो?'' रमण ने पूछा?

''नहीं, बिल्कुल नहीं'' दिवाकर ने ज़ोर देते हुए कहा।

"तो फिर बताना तो सही, क्यों यह विवाह करने से अस्वीकार कर रहे हो?'' रमण ने फिर से पूछा।

''इसका कारण है, आप बाप-बेटे का स्वभाव। उस दिन जब मैं आपके घर आया था, तब आपकी छोटी बेटी ने आप से शरारती जवान के बारे में शिकायत की। परंतु, आप बाप-बेटे ने इस विषय में कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखमी। उस शरारती को न्यायाधिकारी के पास ले जाना था, पर उलटे आपने अपनी बेटी को कोसा, उसी की गलती बतायी। ऐसे कायर परिवार से रिश्ता जोड़ना मुझे अच्छा नहीं लगता, मेरा मन इसके लिए नहीं मानता।'' दिवाकर ने क्रोध-भरे स्वर में कहा।

''बेटे, समझ लो कि तुम राज कर्मचारी नहीं हो, एक साधारण कन्या के पिता हो, तो तब जाकर सोचने पर यह समस्या तुम्हारी समझ में आयेगी। उस दिन जिस जवान ने मेरी बेटी से छेड-छाड की, वह काला चोर गजराज का बेटा है। हमारे शहर के लोगों ने उस गजराज के दुष्कर्मों के बारे में राजा से शिकायत की, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। सोचो कि अगर हम उसके बेटे के विरुद्ध कुछ करते तो उसका क्या नतीजा निकलता। कांटा केले के पत्ते पर गिरे या केले का पत्ता कांटे पर गिरे, नुक़सान तो केले के पत्ते को ही होगा। उस स्थिति में अपनी बेटी को नियंत्रण में रखने के अलावा और कोई चारा नहीं है। परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार करना कायरता नहीं कहलाती। इसपर खूब सोचो और अपना निर्णय बाद में सुनाना।'' यह कहकर रमण वापस चला गया।

दिवाकर ने, रमण की बातों पर खूब सोचा-विचारा। उसने जान लिया कि उनमें सचाई है। वास्तविकता है। राज कर्मचारियों में जो साहस होता है, वह साधारणतया सामान्य लोगों में नहीं होता। उसे लगा कि बाप-बेटे को इसके लिए दोषी ठहराना सही नहीं है। उसने फ़ौरन शांतामणि से विवाह रचाने के लिए अपनी सहमति दे दी और इसके कुछ ही दिनों के बाद उन दोनों की शादी हो गयी।

निकम्मा

लोकनाथ तीस साल की उम्र का था। उसका अपना कोई नहीं था। गाँव के लोग जो भी काम उसे सौंपते, बिना हिचकिचाये, वह कर डालता था। भूख, नींद आदि समस्याओं को लेकर वह कभी चिंतित नहीं होता था। भूख लग जाए, तो किसी के भी घर पर वह निःसंकोच चला जाता था और उसे भोजन मिल जाता था। रातों में वह किसी गृहस्थ के घर के चबूतरे पर आराम से सो जाता था। वह अपने जीवन से पूरी तरह सन्तुष्ट था और उसे किसी प्रकार का अभाव नहीं खटकता था।

एक बार वह, पुजारी के बताये काम पर पास ही के गाँव में लगनेवाली हाट में कुछ चीजें खरीदने गया। आवश्यक चीज़ें उसने खरीद लीं और वहाँ के विचित्र प्रदर्शनों को देखने के बाद गाँव लौट पडा। तब तक सूर्यास्त हो चुका था और अंधेरा छा रहा था।

बिना किसी चिन्ता के मस्ती में लोकनाथ गुनगुनाता हुआ जाने लगा। "जब वह अपने गाँव की सरहद पर पहुँच गया, तब सामने से एक आदमी आया और कहने लगा, "उस दिन तुमने छिपकर मुझ पर हमला किया और मुझे मारा-पीटा। देखना, अब मैं तुम्हारा क्या हाल करता हूँ।" यह कहते हुए उसने उसके कंधे पर ज़ोर से मारा।

लोकनाथ गिर तो गया, पर तुरंत ही उस पर "अहा, अहा" कहते हुए ज़ोर से हँसने लगा। उस आदमी ने आश्चर्य-भरे स्वर में उससे पूछा, "गधे की तरह दांत क्या दिखा रहे हो?" कहते हुए उसने उसे मारने के लिए फिर हाथ उठाया।

लोकनाथ ने हँसते हुए ही कहा, "मैं कोई गधा नहीं हूँ, मेरा नाम लोकनाथ है।" यह कहते हुए जोर से वह हँसता ही गया।

-राम शर्मा
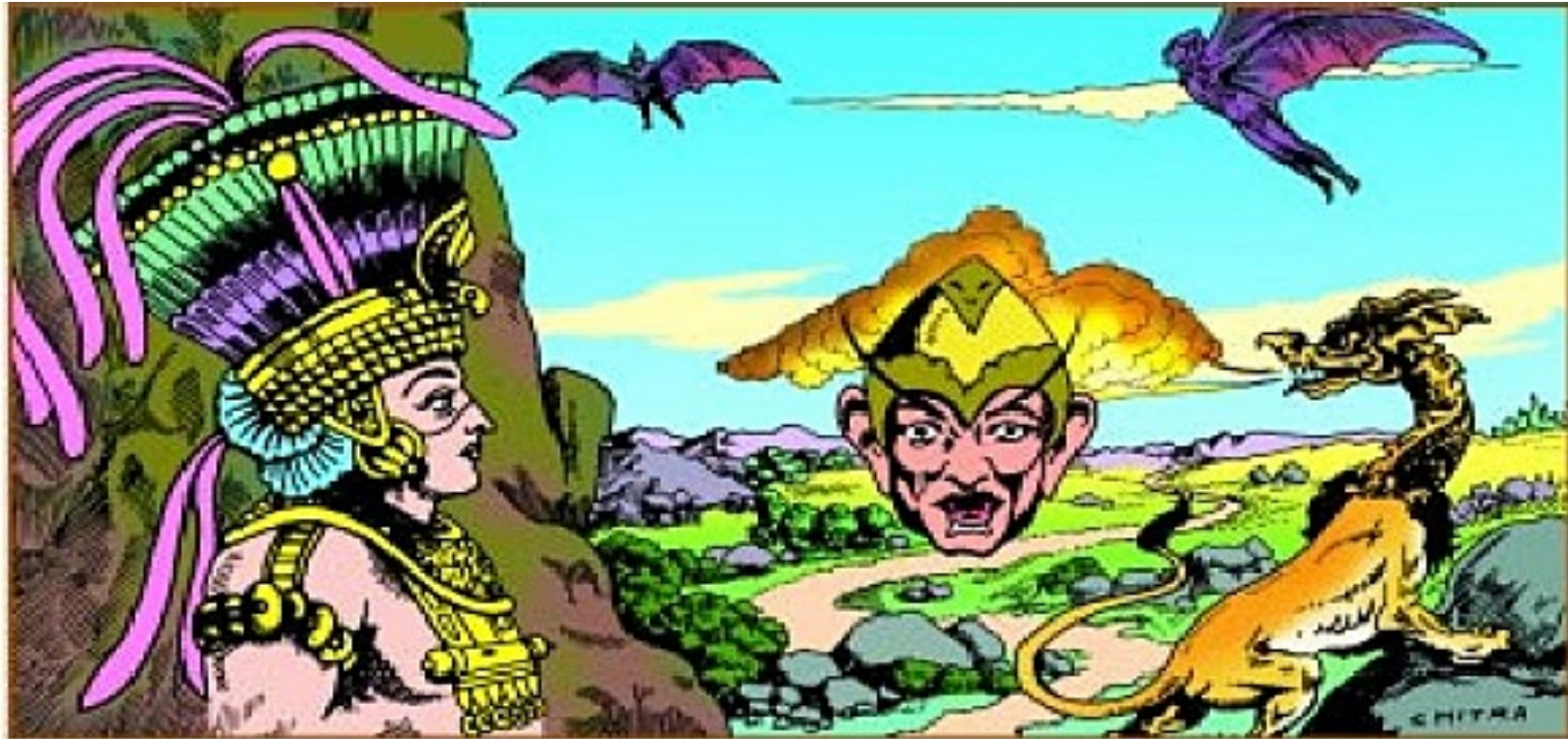
भयंकर घाटी

6

(ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक के शिष्य जयमल्ल के साथ केशव हाथियों के झरने में स्नान करने गया। वहाँ से लौटते समय, जयमल्ल ने केशव से मान्त्रिक के कारण आनेवाली आपत्ति के बारे में बताया। वे जब गुफ़ा के पास पहुँच रहे थे, तो मान्त्रिक ने ज़ोर से पुकार कर उन्हें कुछ समिधायें लाने के लिए कहा। बाद में)

ब्राह्मदण्डी का उसको देखकर मुस्कराना और यह कहना कि कालभैरव भूख के कारण तड़प रहा है– इस सबने केशव को भयभीत कर दिया। केशव ने सोचा कि कहीं उसने जयमल्ल और उसकी बातें अपनी मन्त्र शक्ति के कारण सुन तो नहीं ली थीं। चार पाँच घंटे में तय हो जायेगा कि वह मरता है या मान्त्रिक ब्राह्मदण्डी।

केशव यही सोचते सोचते जयमल्ल के साथ पेड़ के नीचे कुछ समिधायें इकट्ठा करता रहा। जब एक बड़ा-सा गट्ठर बन गया तो दोनों उसे सिर पर उठाकर मान्त्रिक की गुफ़ा की ओर गये। जैसे-जैसे वे गुफ़ा के पास पहुँचते गये वैसे-वैसे उनको मान्त्रिक का मन्त्रों का पढ़ना सुनाई देने लगा। जयमल्ल और केशव ने लकड़ियों का गट्ठर गुफ़ा के सामने डाल दिया और वे चुपचाप गुफ़ा के अन्दर चले गये।
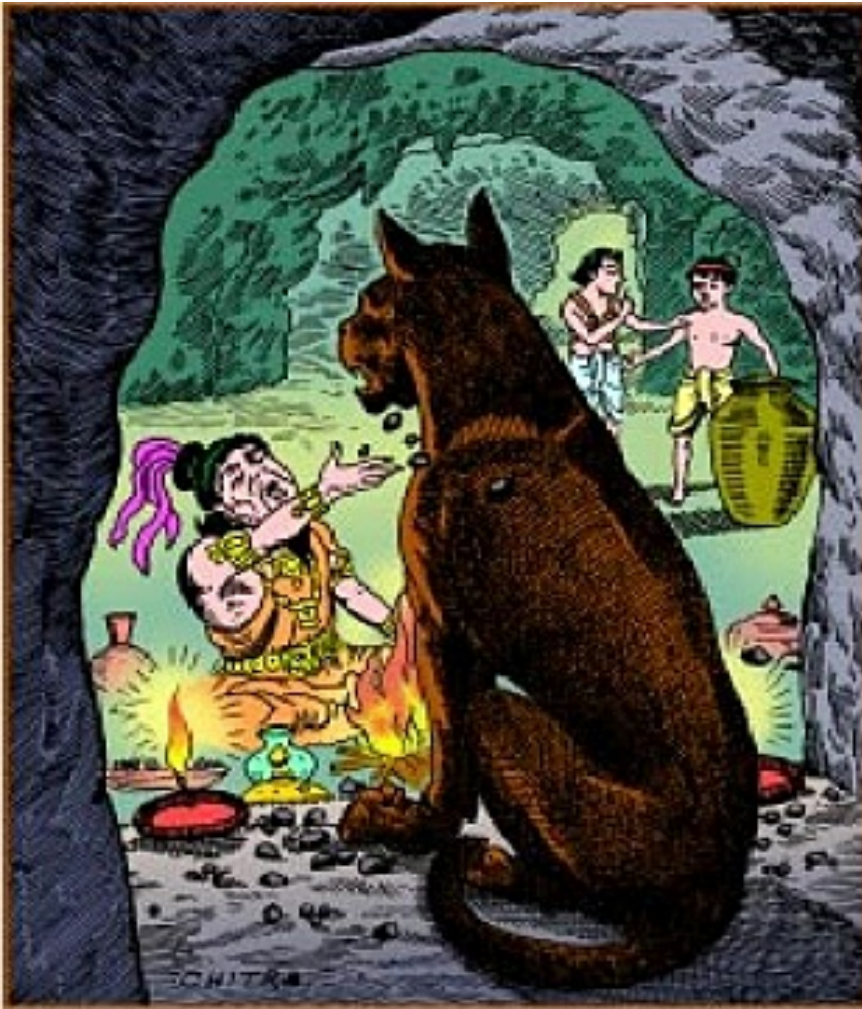
ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक, कालभैरव की मूर्ति के सामने पद्मासन लगाकर जोर से मन्त्र पढ़ता, और बीच-बीच में मूर्ति पर पत्थर फेंकता जा रहा था। यह भी क्या पूजा करना है– केशव ने ऐसी शक्ल बना कर जैसे पूछ रहा हो यह क्या कर रहा है, जयमल्ल की ओर इशारा किया। उसने होंठ पर हाथ रखकर बताया कि वह कुछ न बोले।

इधर पहाड़ पर गुफा में मान्त्रिक, कालभैरव की कंकड़ों से पूजा करके उसे प्रसन्न करने में लगा हुआ था और उधर ब्रह्मापुर में प्रजा और राजा इस भय और चिन्ता में परेशान थे कि आस पास के राजा उनपर शीघ्र ही आक्रमण करनेवाले हैं। वे सब डरे हुए और सहमे हुए थे। राजा और मन्त्री का ख्याल था कि पहाड़ पर शत्रु सेना जमा हो रही है। इसलिए उन्होंने कुछ सेना यह जानने के लिए वहाँ भेजी कि पहाड़ पर क्या हो रहा है। उनको यह भी कहा गया कि यदि वहाँ शत्रु हो तो उनको मार दिया जाये। परन्तु अभी वे पहाड़ पर चढ़ ही रहे थे कि सारा पहाड़ काँप उठा। बड़े-बड़े पत्थर लुढ़कने लगे और बहुत-से सैनिक मारे गये। और जो मरने से बच गये थे, वे जो कुछ उन्होंने पहाड़ पर देखा था उसके बारे में तरह-तरह की बातें कह रहे थे।

राजा के रहस्यकक्ष में उसके साथ मन्त्री, हाल में नियुक्त सेनापति और राजगुरु भी थे। सेनापति और मन्त्री का कहा सुनने के बाद राजा ने अपने गुरु की ओर मुड़कर कहा, ''गुरु जी, आपने सब सुन ही लिया है । सैनिकों की किन बा तों पर विश्वास किया जाये? क्या विश्वास किया जाये कि उस पहाड़ पर सैकड़ों सैनिक हैं? या इस बात पर विश्वास किया जाये कि वहाँ एक मान्त्रिक है, जिसने शरीर पर खून पोत रखा है और जिसकि आँखों से अंगारे निकल रहे हैं? जिसके पास मंत्र की अपार शक्ति है, जो बिजली गिरा सकता है, पहाड़ हिला सकता है, भूकम्प ला सकता है? कुछ समझ में नहीं आ रहा है।''

राजगुरु ने एक क्षण कुछ सोचा, फिर सिर हिलाते हुए धीमे-धीमे कहा, ''हम क्यों न यह सोचें कि दोनों बातें ही ठीक हैं?''

''मान्त्रिक और शत्रुओं में कैसे पटी? आपका शायद यह कहना है कि वह मान्त्रिक भी शत्रुओं की मदद कर रहा है?'' राजा ने पूछा।

''मैं यह निश्चित रूप से तो नहीं कह सकता,

यही सत्य है। पर एक बात अवश्य सत्य है कि जो हमारे सैनिक उस पर्वत के पास गये थे, वे पगला गये हैं। यह बात छोड़िये कि इन लोगों ने वहाँ सैकड़ों शत्रु सैनिक देखे हैं; वे तो यहाँ तक कह रहे हैं कि मान्त्रिक ने ही पर्वत में भूचाल पैदा किया था। फिर वहाँ वह विचित्र जन्तु भी है?'' कहता-कहता राजगुरु मुस्कराया।

''क्या वैसे जन्तु के होने की ही गुंजाइश नहीं है? पहले तो मुझे विश्वास न हुआ। परन्तु उस मान्त्रिक के बारे में सुनने के बाद...'' कहता-कहता मन्त्री सहसा रुका।

''मन्त्री! मैंने भी थोड़ा बहुत मन्त्रशास्त्र पढ़ा है।'' राजगुरु ने झुंझलाते हुए कहा।

''गुरु जी! इसीलिए तो आपको यहाँ बुलाया है। बिना आपकी सहायता के हम कुछ नहीं कर सकते?'' राजा ने राज गुरु को मनाते हुए कहा।

''हम उन लोगों की बातों से जिन्होंने अनुमान मात्र किया है, किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सकते। आप अपने किसी जिम्मेदार अधिकारी को स्थिति को जाँचने-परखने के लिए भेज कर देखिये। उसकी नजर में सत्य क्या है, शायद उसके आधार पर हम लोग कोई राय बना सकें और तदनुसार आगे का कार्यक्रम निर्धारित कर सकें। जल्दबाजी में कोई राय बनाना उचित नहीं होगा। इसलिए पहले आप अपने अंगरक्षकके नेतृत्व में कुछ सैनिकों को पहाड़ पर जाने दीजिये।'' कहता हुआ राजगुरु उठा और कमरे से बाहर चला गया।

राजा की आज्ञा पर अंगरक्षक सैनिकों के साथ यह जानने के लिए निकल पड़ा कि पहाड़ पर कौन था और वहाँ की परिस्थिति क्या थी? वे पहले पहाड़ के पास के जंगल में गये। वहाँ उस समय चारों ओर सन्नाटा था। वहाँ अजीब सी शान्ति थी। मनुष्य का कौन कहे, कहीं परकिसी पशु-पक्षी की कोई आहट तक नहीं सुनाई पड़ी।

सामने वह पहाड़ था, जो भूचाल के कारण भयंकर मालूम हो रहा था। पत्थरों के पत्थरों पर गिरने पड़ने से डरानेवाली आकृतियाँ बन गई थीं। यह देख उसके डर की हद न थी। साथ के सैनिकों की तो बुरी हालत थी। वे डर के मारे काँप रहे थे।

''तुममें से कोई क्या पहले इस पहाड़ पर चढ़ा है? क्या ही अच्छा होता, यदि कोई हममें ऐसा होता, जो यहाँ के रास्ते वगैरह जानता हो?'' राजा के अंगरक्षक ने चिन्तित होते हुए कहा।
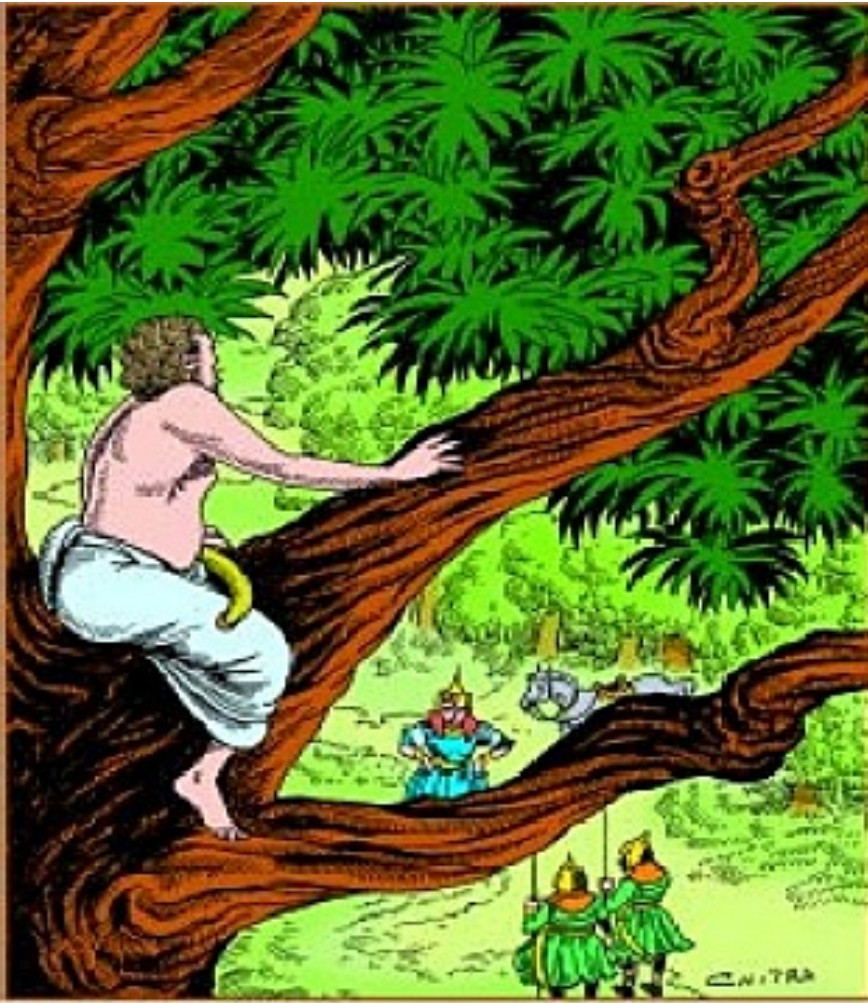
उसके साथ के सैनिकों में एक पहले पहाड़ पर चढ़ चुका था। परन्तु शत्रु सैनिकों की कथाएँ, विचित्र जन्तु, मान्त्रिक की बातें याद करके उसके रोंगटें खड़े हो रहे थे।

"हुज़ूर...पहाड़ पर चढ़कर देखने को है ही क्या? यदि वहाँ शत्रु हैं या मान्त्रिक ही हे तो हम जीते जी उनके बारे में राजा से कहने के लिए वापस आ न सकेंगे। दोनों ही अवस्थाओं में हमारी मृत्यु निश्चित है। इसकी कोशिश में पहले ही हमारे बहुत सैनिक मारे जा चुके हैं। यदि यह माना जाये कि वहाँ ये कोई नहीं हैं तो वहाँ जाना ही बेकार है।'' सैनिक ने कहा।

अंगरक्षक को उसकी ये बातें जंचीं। "वापस जाकर अगर यह कह दिया गया कि वहाँ कोई नहीं है, काफी है। पर साथ के सैनिकों का कैसे विश्वास किया जाये? राजा की कृपा पाने के लिए यदि उन्होंने कह दिया कि हम पहाड़ पर चढ़े ही न थे तो...'' अंगरक्षक उधेड़बुन में था और उसे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाये। एक तरफ जान का भय और दूसरी तरफ कर्त्तव्य, राजा की आज्ञा, सच की सही जानकारी।

"ओह, ये सब बेकार की बातें हैं। हमें पहाड़ पर चढ़कर देखना ही होगा कि वहाँ कौन है? शत्रुओं के हाथ मारे जायेंगे तो वीर गति यानी स्वर्ग प्राप्त करेंगे। यदि जीते जी वापिस आ गये तो राजा से बहुत-से इनाम पायेंगे। फिर भी यदि कोई रास्ता दिखाने वाला हो, तो बड़ा अच्छा हो...'' सोचते-सोचते सिर खुजलाते-खुजलाते अंगरक्षक ने पहाड़ की ओर देखा।

अंगरक्षक और उसके सैनिक जिस पेड़ के नीचे खड़े थे, उस पेड़ पर केशव का बूढ़ा पिता बैठा था। जब से उसका लड़का विचित्र जन्तु पर सवार होकर पहाड़ पर चला गया था, तब से वह वहाँ की कई बातें देख रहा था।मान्त्रिक का गुफ़ा से बाहर आना, अपने लड़के का बातें करना, ब्रह्मापुर के सैनिकों का आक्रमण, पहाड़ पर भूचाल का आना– उसने सब कुछ देखा था।

बूढ़े को विश्वास हो गया था कि उसका लड़का किसी मान्त्रिक के चुँगल में फँस गया है। वह सोच रहा था कि कैसे वह अकेले जाकर उसकी रक्षा करे। लेकिन उसे कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था। अकेले जाने से लड़के के साथ उसकी जान को भी खतरा था। मांत्रिक के सामने भला उसका

क्या वश चलता। विचित्र जन्तु पर भी उसका भरोसा नहीं था। क्या पता, वह मांत्रिक का शिष्य हो और मांत्रिक के आदेश पर ही उसके बेटे को ले गया हो। फिर भी वहएक बार केशव को बचाने के लिए पहाड़ पर अवश्य जाना चाहता था। लेकिन कैसे? अब इन सैनिकों के साथ अंगरक्षक का पेड़ के नीचे आना और उसका यह कहना कि क्या अच्छा होता यदि कोई रास्ता दिखानेवाला होता– यह सब सुन उसे कुछ ढाढ़स हुआ। घने अन्धेरे में आशा की एक किरण दिखाई पड़ी।

बूढ़ा बिल्ली की तरह टहनियों पर से उतर पास के एक और पेड़ के नीचे जाकर वहाँ लेट गया। और आँखें मूँदकर इस तरह बोलने लगा, जैसे नींद में बड़बड़ा रहा हो। उसका बड़ बड़ाना सुन राजा के अंगरक्षक और सैनिकों के ऊपर के प्राण ऊपर और नीचे के नीचे रह गये। वे डर से उछल पड़े। उन्होंने उस तरफ़ देखा, जिस तरफ़ से आवाज़ आ रही थी। उन्हें पेड़ के नीचे एक बूढ़ा दिखाई दिया।

"यही शायद मान्त्रिक होगा? उसकी बड़ी दाढ़ी देखो। सोता मालूम होता है। यदि अब उसका गला काट दिया गया, तो काम पूरा हो जायेगा।" एक सैनिक बोला।

यह सुनते ही बूढ़े ने सोचा कि उस पर आफत आनेवाली है। वह अंगड़ाई लेता उठा। बूढ़े का हाव-भाव देखकर अंगरक्षक ने सोचा कि वह मान्त्रिक नहीं हो सकता।

वह म्यान में तलवार रखते हुए अट्टहास करके उसके पास आया। "कौन हो तुम? यहाँ तुम्हें क्या काम है?" उसने दाँत पीसते हुए पूछा।

बूढ़े ने अभी जवाब न दिया था कि सैनिकों में से एक ने पूछा, "क्या तुम शत्रु सैनिक हो?"

"हुज़ूर, जो कुछ आप सोच रहे हैं, मैं वह कुछ भी नहीं हूँ। मैं इस जंगल में कन्द मूल पर निर्वाह करनेवाला बूढ़ा हूँ।" बूढ़े ने कहा।

यदि यही बात है, तो मैं विश्वास दिलाता हूँ कि हम तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ेंगे। मैं ब्रह्मापुर राजा का अंगरक्षक हूँ। मैं,यहाँ यदि कोई शत्रु हो, तो उनको खत्म करने के लिए आया हूँ। क्या तुम पहाड़ के रास्ते जानते हो?" अंगरक्षक ने पूछा।

बूढ़े ने हथेली दिखाकर कहा, "मैं जिस तरह हाथ की लकीरें जानता हूँ, उसी तरह पहाड़ के रास्ते जानता हूँ।"

"अरे वाह, तुम अच्छे वक्त मिले। तो आगे चलकर रास्ता दिखाओ। तुम्हारी हालत तो अब तब की ही जान पड़ती है, नहीं तो राजा से कहकर तुम्हें बहुत से इनाम दिलवाता।" अंगरक्षक ने कहा। बूढ़ा अंगरक्षक की बातें सुनता न मालूम होता था। वह तो बस इसलिए उतावला हो रहा था कि कैसे उस अंगरक्षक की मदद करे। वह पहाड़ की ओर चलने लगा।

कुछ दूर जाने के बाद अंगरक्षक ने बूढ़े के पास तलवार देखी। उसने चकित होकर पूछा, "जंगल में कन्द मूल पर जीनेवाले के लिए तलवार की क्या ज़रूरत है?"
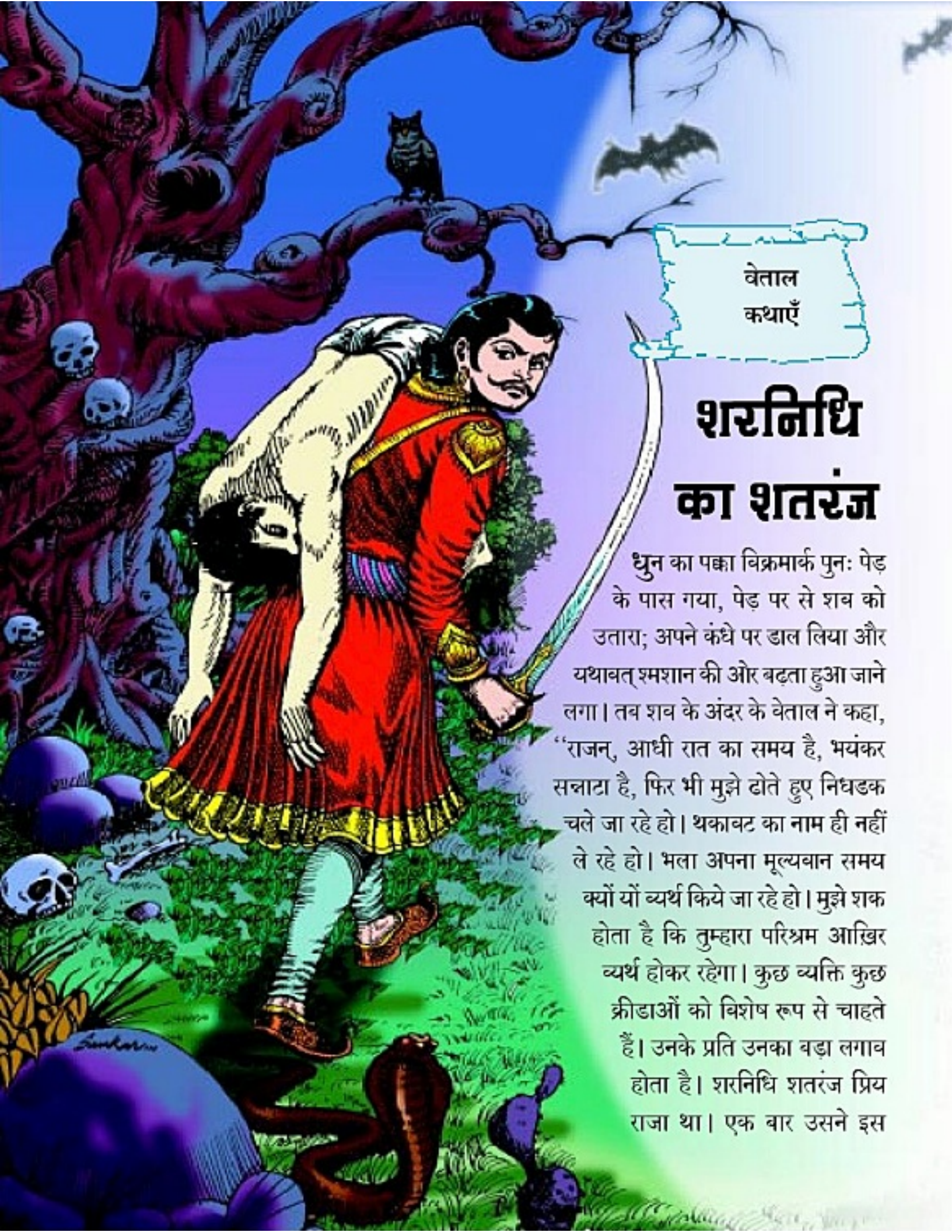
"मैं कभी ब्रह्मापुर राजा के यहाँ सैनिक था। यह राजा नहीं, इनके पिता। तबसे यह तलवार मेरे साथ ही है।" बूढ़े ने झुँझला कर कहा।

यह सुनते ही सैनिक कानाफूसी करने लगे। अंगरक्षक ने उसे घूरते हुए धीमे से कहा, "हमारी जान पर कोई खतरा नहीं है। क्योंकि मुझे उस पर विश्वास था, इसलिए ही मैंने उसे रास्ता दिखाने के लिए कहा। यदि उसने कोई धोखा दिया तो पीछे से उसका गला काट दूँगा।"

बूढ़े ने ये बातें सुन ली थीं, पर उसने इस तरह दिखाया जैसे कुछ सुना ही न हो। वह पहाड़ पर चढ़ता गया। ***(अभी है)***

वेताल कथाएँ

नास्तिक की देव प्रार्थना

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव को उतारा और उसे कंधे पर ड़ाल लिया। फिर यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ‘‘राजन्, इस भयंकर श्मशान में आधी रात को इतने कष्ट झेलते हुए तुम्हें देखकर आश्चर्य होता है। देखा गया है कि कुछ आस्तिक धन का उपयोग दान धर्मों के लिए करते हैं। ऐसे दानी, क्रमशः दरिद्र हो जाते हैं। ऐसे ही वे नास्तिक भी हैं, जो दान धर्म के बारे में किंचित भी नहीं सोचते। वे धन इकट्ठा करते जाते हैं और देखते-देखते करोड़पति बन जाते हैं। वे सब प्रकार के सुखों का अनुभव करने लगते हैं। मैं तुम्हें

ऐसे दो आस्तिक व नास्तिक बाप-बेटे की कहानी सुनाऊँगा। थकावट दूर करते हुए उनकी कहानी ध्यान से सुनना।'' फिर बेताल उनकी कहानी यों सुनाने लगाः

भाग्यपुर के निवासी धनपाल को विरासत में भारी संपत्ति मिली। साथ ही उसमें दया, देवभक्ति भी भारी मात्रा में थे। कोई भी ज़रूरतमंद खाली हाथ लौटता नहीं था। उसकी पत्नी सुरुचि को यद्यपि भगवान में विश्वास था पर पति का इस प्रकार से देव भक्ति के नाम पर धन लुटाना कतई पसंद न था। वह हमेशा उससे कहा करती थी कि पुरखों की दी हुई संपत्ति को संतान को सौंपना कर्तव्य है। परंतु धनपाल उसकी बातों पर कोई ध्यान देता नहीं था।

श्रीपाल, गोपाल, गुणपाल उसके तीन पुत्र थे। दूसरा और तीसरा बेटा पिता की ही बातों को मानते थे। बडा बेटा श्रीपाल माँ की बातें ही सही मानता था। वह समझता था कि आस्तिक होने से दान-धर्म में बहुत धन लुटाना पड़ता है। इसीलिए संपत्ति की रक्षा के वास्ते वह बचपन से ही नास्तिक हो गया। और था अव्वल दर्जे का कंजूस भी।

धनपाल ने एक दिन पत्नी से कहा, ''धन शाश्वत नहीं है, वह संतोष नहीं देता। मनुष्य को संतोष देती है तो संतृप्ति मात्र ही। जिनमें देव भक्ति व दया गुण नहीं होते, उनमें कदापि संतृप्ति नहीं होती।''

पत्नी सुरुचि ने पति की बातों का खंडन करते हुए कहा, ''जब धन होता है, तब उसके मूल्य को जानने से हम इनकार करते हैं। जब धन नहीं होता तब हमारी अच्छाई हमारे काम नहीं आती, मांड का पानी भी पीने को नहीं देती।''

बेटों के बालिग होने तक धनपाल के पास जो भी धन था, खर्च हो गया। बीस एकड़ों की भूमि मात्र बच गयी। उसके खर्च के लिए खेत से आनेवाली आमदनी काफी नहीं पड़ती थी, इसलिए उसने खेत का एक भाग बेचना चाहा। तब सुरुचि ने पति से कहा, ''बच्चे जवान हो गये हैं। संपत्ति में से उनका हिस्सा उन्हें दे दीजिये और अपना जो हिस्सा है, आप जैसा चाहें, कर लीजिये।'' कटुता-भरे स्वर में उसने कहा।

धनपाल ने पत्नी ने कहे अनुसार ही किया। उसने संपत्ति को चार हिस्सों में बाँट दिया और

बेटों से कहा, ''हममें से हर कोई पाँच एकड़ का स्वामी है। धन के खर्च के विषय में जो मेरी पद्धति को मानते हैं, वे मेरे साथ रह सकते हैं, जो मेरी पद्धति को स्वीकार नहीं करते, वे अलग रह सकते हैं।''

दूसरे और तीसरे बेटे ने पिता के ही साथ रहने का निश्चय किया। परंतु बड़ा बेटा श्रीपाल अलग हो गया। उसे खेती पर भरोसा नहीं था इसलिए गाँव में ही उसने एक छोटा व्यापार शुरू किया। दो सालों के अंदर ही वह लखपति बन गया। कुछ दोस्तों ने उससे धन की सहायता माँगी। पर उसने किसी की भी सहायता नहीं की, इसलिए वे उसे कंजूस कहने लगे।

थोड़े ही समय के अंदर धनपाल ने जो भी ज़मीन थी, बेच डाली। खाने के लिए भी जब कुछ नहीं रह गया तब उसने दूसरों से मदद माँगी। परंतु किसी ने भी मदद नहीं की। तब धनपाल की समझ में आया कि अपनी शक्ति से बढ़कर दान देना अच्छा नहीं। जब कोई दूसरा चारा नहीं रह गया तो वह सपरिवार बडे बेटे के पास गया और बोला, ''तुममें जो दूरदर्शिता थी, वह मुझमें नहीं थी। थोड़ा-सा धन कर्ज़ के रूप में मुझे देना। मैं और तुम्हारे भाई कोई व्यापार शुरू करेंगे और अपना पेट भरते हुए थोडे ही समय के अंदर तुम्हारी रक़म तुम्हें लौटा देंगे।''

श्रीपाल ने कहा, ''अभी आपके हाथ में धन नहीं रहा, इसलिए आप ऐसी बातें कर रहे हैं। धन हाथ में आ जाए तो अपनी पुरानी पद्धति को ही अमल में लायेंगे। इसलिए आप सब मेरे ही साथ रहिये, किसी प्रकार की कमी आने नहीं दूँगा। परंतु हाँ, एक शर्त अवश्य है। जब तक आप यहाँ रहेंगे तब तक आपमें से कोई भी भगवान की पूजा और दान-धर्म नहीं करेंगे।''

बेटे की इन बातों पर धनपाल ने नाराज़ हुए बिना, शांत होकर कहा, ''जब तक जीवित हूँ, भक्ति बिना मुझसे रहा नहीं जायेगा।'' यह कहते हुए वह दूसरों के साथ वहाँ से निकल पड़ा।

नास्तिक होते हुए भी बडे बेटे ने उसकी इज्जत की, अच्छी आवभगत की, इसकी धनपाल को खुशी थी। पर उसे यह ग़म खाये जा रहा था कि श्रीपाल ने धन देकर सहायता करने से इनकार कर दिया। उससे यह धक्का सहा नहीं गया और बीमार पड़ गया। सही इलाज न होने के कारण

धनपाल की शारीरिक स्थिति दिन ब दिन बिगड़ने लगी। ऐसी परिस्थितियों में अंगद नामक एक रामभक्त उस गाँव में आया। वह राम की महानता का प्रचार करने लगा। गाँव के सबके सब मानने लगे कि जिस घर में उसका पदार्पण होता है, वहाँ शुभ ही शुभ होता है।

गोपाल और गुणपाल को जब यह समाचार मालूम हुआ तब उन्होंने अंगद क ो अपने घर बुलाया। वहाँ खाट पर लेटे पडेधनपाल को देखकर अंगद ने कहा, ''राम को तुमने ठेस पहुँचायी। इसी कारण तुम्हारी यह दुर्दशा हुई।''

धनपाल ने दीनता के साथ उसे देखते हुए कहा, ''मेरा बड़ा बेटा नास्तिक है। पिता होने के नाते उसकी इस भूल का मैं ही जिम्मेदार हूँ आप ही बताइये कि इस भूल का परिहार कैसे करूँ?''

''तुमने अपने बेटों की संपत्ति उन्हें नहीं देकर खर्च कर दिया। तुम्हारे इस काम पर क्या भगवान को कष्ट नहीं होगा? तुम संपत्ति को बरबाद कर रहे हो, इसीलिए तुम्हारा बड़ा बेटा नास्तिक हो गया, कंजूस हो गया। समझने की कोशिश करो।''

गुणपाल ने कहा, ''महोदय, मेरे पिताश्री पुण्य कार्यों पर ही खर्च करते थे। फिर भी हम कष्ट सहते जा रहे हैं। मेरा बड़ा भाई नास्तिक है, पर करोडपति बनकर सुखों का अनुभव कर रहा है। क्या यही भगवान का न्याय है?''

अंगद ने गुणपाल के कंधे को थपथपाते हुए कहा, ''तुम्हारे बडे भाई ने भगवान का विश्वास नहीं किया, पर उसने भगवान का दूषण भी नहीं किया । कंजूस है, अतः अपात्र दान भी नहीं किया। इसी कारण तुम सबों का पुण्य उसे प्राप्त हुआ है।''

सुरुचि ने अंगद से कहा, ''आप जैसा कहेंगे, भविष्य में ऐसा ही करेंगे। पहले आप मेरे पति के स्वस्थ होने का उपाय बताइये।''

''तुम्हारे पति को बज्र भस्म का सेवन करना होगा। उसे तैयार करने के लिए एक लाख रुपये के मूल्य का बज्र चाहिये।'' अंगद ने कहा।

सुरुचि, गोपाल, गुणपाल यह सुनकर स्तंभित रह गये। भला इस स्थिति में एक लाख रुपयेलाना कैसे संभव हो सकता है। तब अंगद ने उनसे कहा, ''धन जुटा नहीं सकते तो एक दूसरा उपाय भी है। तुममें से कोई एक हृदयपूर्वक भगवान का

विश्वास करके धनपाल के स्वास्थ्य के लिए एक पूरी रात राम के मंदिर में प्रार्थना करो। वे तुरंत चंगे हो जायेंगे। प्रार्थना करनेवाले तुम में से कोई एक हो सकता है या गाँववालों में से कोई एक।''

गोपाल, गुणपाल ने अलग-अलग उसी रात को राम के मंदिर में जाकर पिता के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थनाएँ कीं। दूसरे दिन सुरुचि ने जाकर प्रार्थना की। फिर भी कोई फल नहीं निकला। गाँव के बहुत लोगों ने भी प्रार्थना की। पर धनपाल के स्वास्थ्य में थोड़ा भी सुधार नहीं हुआ।

ऐसी स्थिति में श्रीपाल अंगद से मिला और कहा, ''मैं अपने पिताश्री की बहुत इज्जत करता हूँ। आपको लाख रुपये दूँगा। वज्र भस्म तैयार करके उन्हें स्वस्थ कीजिये।''

अंगद ने हँसते हुए कहा, ''तुम कंजूस हो। हृदयपूर्वक धन राशि देने पर ही मेरा वज्र भस्म काम करेगा। इसके लिए तुम्हें इस रात को राम के मंदिर में रहना होगा और भगवान पर संपूर्ण विश्वास रखकर प्रार्थना करनी होगी। तुम्हारे पिता के स्वस्थ होने की संभावना है।''

श्रीपाल ने अपनी सहमति दी। पर गाँववालों ने यह कहकर उसे मंदिर में आने से मना किया कि एक नास्तिक को वे मंदिर में प्रवेश करने नहीं देंगे। रात होते ही उन्होंने मंदिर के दरवाज़े भी बंद कर दिये।

श्रीपाल मंदिर के सामने खड़ा हो गया और प्रार्थना करने लगा, ''हे राम, कहते हैं कि आप पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए राज्य

को त्यज कर अरण्य चले गये। अगर यह सच हो तो, पिता के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थनाएँ करने के लिए मुझे, मंदिर में प्रवेश होने दीजिये।''

दूसरे ही क्षण मंदिर के दरवाज़े आप ही आप खुल गये। श्रीपाल मंदिर के अंदर गया और श्रीराम की मूर्ति के सामने खड़े होकर प्रार्थना करने लगा।

इससे बहुत पहले ही धनपाल की बीमारी दूर हो गयी। बेहद खुश होकर वह सपरिवार मंदिर आया और श्रीपाल को बडे ही प्यार से गले लगाया।

बेताल ने कहानी बता कर राजा विक्रमार्क से कहा, ''राजन्, परम भक्त धनपाल ने अपनी पूरी संपत्ति खो दी, और नास्तिक श्रीपाल करोड़पति बन गया। क्या यह विचित्र नहीं लगता? धनपाल की पत्नी और उसके दोनों बेटों ने देव प्रार्थना की, फिर भी वह स्वस्थ नहीं हो पाया। परंतु एक नास्तिक की प्रार्थना सफल हुई। क्या यह आपको विचित्र, अस्वाभाविक नहीं लगता? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने बेताल के संदेहों को दूर करने के उद्देश्य से कहा, ''देवभक्ति और आर्थिक स्थिति में कोई संबंध नहीं होता। पूर्व जन्म कर्म इसके कारण हैं। धनपाल की पत्नी और उसके दो बेटे जो कष्ट झेल रहे हैं, उनके कारण भगवान पर उनका विश्वास उठ गया। इसी वजह से उनकी प्रार्थनाओं का कोई फल नहीं हुआ। गाँववालों ने भी तकलीफ़ों में उसकी सहायता नहीं की, इसी कारण उनकी प्रार्थनाएँ भी व्यर्थ हुईं। अब रही श्रीपाल की बात। पिता की पद्धति को देखते हुए उसे इस बात का भय हो गया कि देव भक्ति से अपार धन खर्च होता है। इसीलिए वह नास्तिक हो गया। वह अपने पिता को चाहता था, उसका आदर करता था, इसीलिए वज्र भस्म के लिए एक लाख रुपये देने को तैयार हो गया। चित्त शुद्ध हो और सत्कार्य करने को आगे आयें तो भगवान ऐसों की प्रार्थनाएँ सुनते हैं। श्रीपाल के विषय में भी यही हुआ।''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधारः ''वसुंधरा'' की रचना)

प्रतिमा अभिषेक

जब ८ फरवरी से १९ फरवरी तक गोमातेश्वर श्री बाहुबली का ८६ वाँ महामस्तकाभिषेक होगा तो कर्नाटक में हसन जिला के श्रवणाबेलागोला में भारी संख्या में लोगों के आने की आशा की जाती है। बारह बर्ष में एक बार होनेबाले इस महोत्सब का जैन समुदाय के लोग बड़ी उत्सुकता से इन्तजार कर रहे हैं। विश्व भर से करीब ३ लाख भक्तों के इस पवित्र नगर में आने की आशा है, जहाँ श्री बाहुबली की ५७ फुट की संसार की सबसे ऊँची प्रस्तर प्रतिमा है।

जैनधर्म की स्थापना इसके अन्तिम तीर्थंकर बर्धमान महावीर ने की थी। पहले तीर्थंकर आदिनाथ ऋषभदेव राजा थे। वे संन्यास लेना चाहते थे। इसलिए उन्होंने आधा राज्य अपने बड़े बेटे भारत को दे दिया और शेष आधा अपने छोटे बेटे बाहुबली को, जिसने बाद में, भारत के अपने आप को चक्रवर्ती घोषित करने पर आपत्ति की। उनके मंत्रियों ने उनके बीच होने वाले युद्ध को टाल दिया, लेकिन दोनों भाइयों ने आपस में द्वन्द्व युद्ध करने का निश्चय किया। बाहुबली बिजयी होने पर भी राज्य को त्याग कर जंगल चला गया और एक बर्ष तक बिना भोजन या पानी के तपस्या करता रहा। शीघ्र ही उसने आत्म-सिद्धि प्राप्त कर ली।

बहुत दिनों के बाद, दसवीं शताब्दी में चामुण्ड राय, गंगा बंश के राजा रचमल-द्वितीय का प्रधान मंत्री था। चामुण्ड राय एक बार, अपनी माँ को पौदनपुरा ले गया जहाँ कभी बाहुबली राज्य करता था। माँ और बेटा दोनों ने एक ही सपना देखा जिसमें कुशमन्दिनी देबी ने उनके सामने प्रकट होकर चन्द्रगिरि पहाड़ी से दक्षिण में इन्द्रगिरि की ओर बाण चलाने के लिए कहा। दूसरे दिन चामुण्ड राय ने इन्द्रगिरि पर अपना स्बर्णिम बाण चलाया। तभी उसने पहाड़ी के पृष्ठपट पर आकाश लेख में बाहुबली की आकृति बनी देखी। उसने शिला पर छेनी से मूर्ति बनाना शुरू किया। यह काम बाद में मूर्तिकारों के एक दल ने पूरा किया। चामुण्ड राय ने पहला मस्तकाभिषेक १३ मार्च ९८१ को सम्पन्न किया। उन्हें गोमत नाम से पुकारा जाता था जिसका अर्थ होता है सुन्दर। गोमत के स्बामी से गोमातेश्वर बन गया।

प्रतिमा का अभिषेक झीलों और नदियों के जल, कच्चे नारियल, गन्ने क रस, मधु, दूध, हल्दी और चन्दन के लेप, फूलों तथा रत्नों से किया जाता है।

महाराष्ट्र की एक लोक कथा

कुण्ड पर चमत्कार

बहुत पहले विजय आदित्य नाम का एक राजा राज्य करता था। वह शिव का परम भक्त था। उसने संगमरमर पत्थर में शिव का एक सुन्दर मन्दिर बनवाया था और हमेशा उन्हें प्रसन्न करने के नये तरीके सोचता रहता था।

एक दिन राजा ने सोचा, 'श्रावण का मंगलमय महीना आरम्भ हो गया है। श्रावण में सोमवार के दिन भगवान की पूजा करने से बहुत लाभ होता है, क्योंकि यह दिन-विशेष शिव को बहुत प्रिय है। इसलिए इस अवसर पर विशेष पूजा होनी चाहिये। यह कैसे किया जाये?'

बहुत सोचने के बाद उसके मन में एक विचार आया। क्यों नहीं इस महीने में हरेक सोमवार को १००८ पात्रों के दूध से उनका अभिषेक किया जाये। इस पूजा के लिए सभी लोग दूध दान करें जिससे उन्हें भी पुण्य मिलेगा। पूजा के लिए दूध विशेष रूप से बनाये गये एक कुण्ड में एकत्र किया जायेगा।

कुछ दिनों के बाद राजा के उद्घोषक ने शहर के चौक पर ढोल बजा कर यह घोषणा की, ''नगरवासियो! कल श्रावण का पहला सोमवार है और हमारे राजा एक हजार आठ पात्रों के दूध से शिव की पूजा करेंगे। हरेक गृहवासी को कल सुबह घर का सारा दूध लेकर मन्दिर में अवश्य जाना चाहिये और मन्दिर के कुण्ड में सारा दूध डाल देना चाहिये। याद रखो, तुम सब को सारा दूध डालना चाहिये जिससे कुण्ड मुख तक पूरा भर जाये।''

सभी नगरवासी शहर के चौक पर घोषणा सुनने के लिये आये। कुछ लोग अपने राजा की धर्मनिष्ठा पर खुश थे; अन्य, शायद, पूजा के लिए

अपना सारा दूध दे देने के कारण उतने खुश नहीं थे। लेकिन किसी ने कुछ नहीं कहा और सभी लौट गये।

दूसरे दिन सबेरे से लोग दूध के पात्रों के साथ मन्दिर में जाने लगे। शीघ्र ही, मन्दिर के सामने एक लम्बी कतार बन गई, क्योंकि कुण्ड में अपने हिस्से का दूध डालने के लिए अधिक से अधिक लोग आने लगे। वे सब अपने घर का सारा दूध ले आये थे, बछड़ों के लिए एक बून्द भी नहीं छोड़ा था।

शिशु, बच्चे, बूढ़े तथा बीमार, उस दिन किसी को भी अपने हिस्से का दूध नहीं मिला। क्योंकि सारा दूध मन्दिर के कुण्ड में डाल दिया गया था।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, कुण्ड में दूध का स्तर धीरे-धीरे ऊपर उठने लगा। फिर भी, दोपहर तक कुण्ड आधा ही भरा। हरेक क्षण इतने पात्रों के दूध कुण्ड में डालने पर भी कुण्ड खाली था, यह सचमुच आश्चर्य की बात थी।

क्रमशः पुजारी तथा मन्दिर में एकत्र सभी लोग चिन्तित हो गये। यहाँ क्या हो रहा है? भीड़ में सब घबराहट के साथ कानाफूसी करने लगे। एक व्यक्ति बुदबुदाने लगा, ''क्या बात है? कुण्ड क्यों नहीं भर रहा है, हालांकि हर नगरवासी अपना दूध इसमें डाल चुका है। क्या शिव भगवान नाराज हैं? क्या हम लोगों से अनजाने में कोई पाप हो गया है?'' पुजारी बहुत घबराये हुये थे।

तभी मन्दिर के अहाते में एक बूढ़ी औरत ने प्रवेश किया, जिसे शायद ही किसी ने ध्यान से देखा होगा। वह नगर के दूसरे छोर पर रहती थी। उसने सबेरे उठ कर अपनी सभी गायों का दूध निकाल लिया था, लेकिन बछड़ों के लिए कुछ छोड़ दिया था। फिर उन्होंने परिवार के सदस्यों को दूध पिलाया और घर का कामकाज पूरा किया। इसके बाद केवल एक छोटे कटोरे भर दूध बचा। वह उसे लेकर मन्दिर में गई और यह प्रार्थना करते हुए दूध को कुण्ड में डाल दिया, ''हे कृपासिन्धु प्रभु! सिर्फ इतना ही आप को अर्पित कर सकती हूँ लेकिन यह अपनी पूरी भक्ति के साथ समर्पित कर रही हूँ। कृपया मेरी छोटी सी भेंट को स्वीकार करें।''

और लो, देखो! अब आधा रिक्त कुण्ड दूध से लबालब भर गया। बूढ़ी औरत जैसे विनीत भाव से आई थी वैसे ही चली गई। राजा और पुजारी कुण्ड को भरा हुआ पाकर फूला न समाये और विशेष पूजा का कार्य सम्पन्न किया गया।

अगले सोमवार को वैसा ही हुआ। नगर के सब वासियों ने ईमानदारी से कुण्ड में अपने दूध डाल दिये, फिर भी वह आधा खाली ही रहा और तभी लबालब भरा जब बूढ़ी औरत ने अपने छोटे से कटोरे का दूध उसमें डाला। इस चमत्कार को देख कर सभी चकित थे।

राजा ने इस रहस्य की तह तक जाने का निश्चय किया। इसलिए तीसरे सोमवार को राजा सवेरे से ही कुण्ड के निकट पहरेदार के वेश में खड़ा हो गया और हर घटना पर निगरानी रखने लगा।

पहले की तरह लोग अपने दूध अर्पित करने के लिए कुण्ड के निकट पंक्ति में खड़े होने लगे। लेकिन दूध का स्तर आधा कुण्ड से ऊपर नहीं उठा।

तब बूढ़ी औरत कटोरा भर दूध लेकर आई और ऊँचे स्वर में प्रार्थना करने लगी, ''हे प्रभु! मैं जितना दूध बचा सकी हूँ, वह आप को अर्पित है। मुझे विश्वास है कि आप अपनी असीम कृपा में इसे स्वीकार करेंगे। कृपा करके आशीर्वाद दें जिससे मुझे अपनी धारणा पर दृढ़ बने रहने में शक्ति प्राप्त हो!'' तब उसने कुण्ड में अपना दूध डाल दिया। जैसे ही वह वापस जाने के लिए मुड़ी कि राजा, जो वेश बदल कर निगरानी कर रहा था, यह देख कर चकित रह गया कि कुण्ड दूध से लबालब भर गया।

उसने दौड़ कर बूढ़ी औरत को रुकने के लिए कहा। डर से काँपती हुई वह बोली, ''मुझे क्यों रोकते हो? मैंने क्या किया है?''

राजा ने कहा, ''डरो मत, माँ। मैं राजा हूँ और तुमसे कुछ जानना चाहता हूँ। कितने लोग कुण्ड में अपना दूध कब से डाल रहे हैं, फिर भी आधा कुण्ड से ज्यादा नहीं भरा। लेकिन तुमने जैसे ही इसमें छोटे कटोरे भर का दूध डाला, कुण्ड अचानक लबालब भर गया। क्या बता सकती हो ऐसा क्यों हुआ?''

बूढ़ी औरत ने उत्तर दिया, ''महाराज, मैं एक माँ हूँ और माँ कभी अपने बच्चों को भूखे देखना सह नहीं सकती। इसलिए मैंने आप की आज्ञा

का पालन नहीं किया। गायों से दूध निकालते समय मैंने कुछ दूध बछड़ों के लिए छोड़ दिया और फिर सब बच्चों को पिलाया। इसके बाद जो दूध बचा, वही पूजा के लिए लाई हूँ। भगवान भी माता के समान हैं। वे नहीं चाहते कि बच्चों को भूखों मारें। स्पष्ट बोलने के लिए क्षमा चाहती हूँ। हे राजा, आपने किन्तु यही कर दिया! आपने लोगों को पूजा के लिए घर का सारा दूध लाने के लिए आदेश दिया और बछड़ों, बच्चों, बूढ़ों तथा बीमारों के लिए कुछ भी बचाने के लिए नहीं कहा। प्रजा दुखी थी लेकिन आप की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकी। उन्होंने अर्पण तो किया किन्तु स्वेच्छा से नहीं। भगवान को यह पसन्द नहीं आया। और आप के अर्पण को अस्वीकार करके उन्होंने अपना असन्तोष प्रकट किया!''

राजा यह सुन कर विचारों में खो गया। 'वह ठीक कहती है', उसने मन में कहा। 'राजा को भी अपनी प्रजा के लिए माता के समान होना चाहिये, जो उसके स्वास्थ्य और सुख का ध्यान रखे। लेकिन मैं अपनी पूजा के लिए उन्हें दूध देने पर मजबूर करके महापाप कर रहा था! फिर भगवान हम पर कैसे प्रसन्न रहते?' शर्म से उसका सिर झुक गया।

वह बूढ़ी औरत से बोला, ''मैं तुम्हारा शुक्रगुजार हूँ, माँ। तुमने हमारी आँखें खोल कर सच्ची भक्ति का मार्ग दिखाया है।''

तुरन्त उसने घोषणा करवाई कि आनेवाले सोमवार के दिन लोगों को उतना ही दूध लाना है जो बछड़ों, बच्चों, बूढ़ों तथा बीमारों को पिलाने के बाद बच जाये।

अगले सोमवार को भी, जो श्रावण का अन्तिम सोमवार था, मन्दिर पर सवेरे से ही लम्बी कतार थी। लोग उतना ही दूध लाये थे, जो बचा सके थे। राजा ने भी उतना ही दूध डाला जो महल के बछड़ों, बच्चों, तथा अन्य लोगों से बच पाया था। परिणाम आश्चर्यजनक था। कुण्ड सुबह में ही भर गया था।

राजा अब प्रसन्न था और बूढ़ी औरत का इन्तजार कर रहा था। जब उसने अपने हिस्से का दूध डाल दिया, तब राजा उसे मन्दिर में ले गया और दोनों ने एक साथ पूजा की।

''धन्यवाद माता, भगवान सचमुच आखिर प्रसन्न हो गये।'' राजा ने कहा।

समाचार झलक

एवरेस्ट पर स्थल सेना के महिला अधिकारी

भारतीय स्थल सेना की चार महिलाओं ने विगत जून में एवरेस्ट पर आरोहण कर इतिहास की रचना की। यह उच्चतम शिखर पर पहला स्त्री अभियान था। कैप्टेन शिप्रा मजुमदार, कैप्टेन अश्विनी पवार, कैडेट शेरिंग लाडोल तथा ट्रेनी डेशी लामो ८,८४८ मीटर ऊँची चोटी पर चीनी क्षेत्र के मार्ग से २ जून को पहुँचे। उनके दल ने अपना अभियान १८ मार्च को आरम्भ किया था।

असाधारण प्रतिभा

तिरुची की वैष्णवी को, जिसने कम्प्यूटर साइन्स पढ़ने के लिए अभी-अभी एक इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला लिया है, तिरुक्कुरल, रामायण तथा अन्य काव्य कण्ठाग्र हैं और स्मृति से पूरी किताब लिख सकती है। लेकिन कोई उसे पढ़ना चाहे कि उसने क्या लिखा है तो उसे दर्पण का सहारा लेना होगा क्योंकि वे दर्पण-छवि के अक्षरों में लिखे गये हैं। वह ऐसा तमिल और अंग्रेजी में लिख सकती है। वह दायें से बायें की ओर कागज पर दर्पण-छवि में बिना कठिनाई के लिख सकती है। वह ए-४ साइज पेपर को अंग्रेजी में १० मिनट में भर सकती है और तमिल भाषा में लिखने में २ मिनट लेती है। दर्पण छवि में लिखने के लिए बायें हाथ का प्रयोग करती है और सीधे अक्षरों में लिखने के लिए दायें हाथ का। उसके स्कूल जाने से पहले भी उसेकमामा ने उसे बेढ़ंगे तरीके से लिखते देखा था और सोचा था कि वह उर्दूमें लिख रही है जो दायें से बाईं और लिखी जाती है। स्कूल में उसकी शिक्षिकाओं ने उसे सामान्य ढंग से लिखने की सलाह दी। लेकिन वह अपनी खुशी के लिए वैसी ही लिखती रही और अपनी प्रतिभा को विकसित किया। आजकल वह दर्पण छवि में लिखने के लिए कम से कम एक घण्टा समय हर रोज देती है।

THE ADVENTURES OF G-man

एंड्रोमेनिया

अल्टीमेटम भाग 2

प्रस्तुतकर्ता Parle-G POWER SUPPLY

अब तक की कहानी। जी-मैन और उसके दोस्तों ने टैरोलीन की रोबोट सेना को पूरी तरह तहस-नहस कर दिया। या ये सिर्फ उनकी सोच थी। टैरोलीन थोड़ा झुक गया था पर पूरी तरह टूटा नहीं था। उसने अपने पत्ते पूरी तरह खोले नहीं थे।

यक़ीनन वो ऐसा कर पाएगा।
सभी अपने-अपने जी-शिल्ड पहनो और फ़ायर करो।
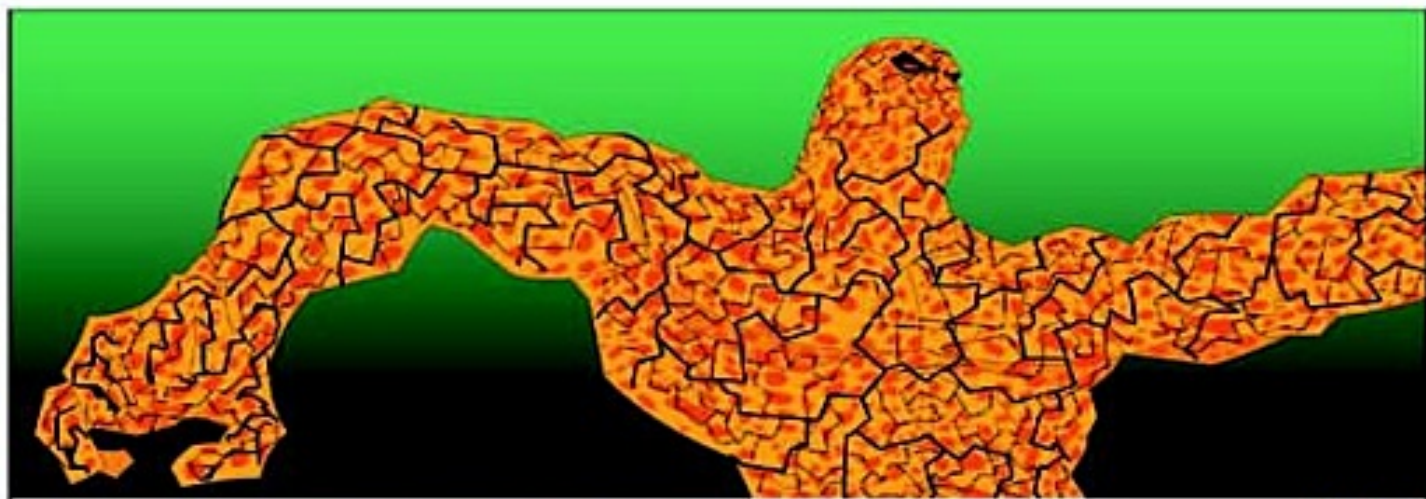
G-man
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

क्या वो असली है।
मुझे तो अपनी आंखों पर यक़ीन नहीं आ रहा।
दोस्तों आपने जो देखा, वो आपको बिल्कुल पसंद नहीं आया होगा, क्यों?
जब तक मेरे एंड्रॉयड्स* काम ख़त्म करेंगे, तब तक मैं ज़रा आराम कर लूं। एंड्रोमेनिया तो अभी बस शुरू हुआ है।
*एंड्रॉयड्सः कृत्रिम रूप से बनाए गए मानव से मिलते-जुलते लोग।

डरने की कोई बात नहीं। वे हमारे जैसे दिखते हैं
पर वे हमारी तरह लड़ना नहीं जानते।

बिल्कुल इस तरह!

क्या तुम्हें ये अजीब नहीं लगता?

अब तुम्हें पता चला?

नहीं, मेरा मतलब है उनकी
ताक़त तो बढ़ती ही जा रही है।

हां! ऐसा लग रहा है मानो स्कूल से अभी-अभी निकले हों।
हम्मSS... जब मैं इन रोबोट्स से पिछली बार लड़ रहा था... एक बात मेरे दिमाग़ में अब आई है।
क्या !
मुझे कहीं जाना होगा। तुम लोग मुक़ाबला जारी रखो। मैं बस यूं गया और यूं आया।
*एंड्रोमेनिया भाग 1
G-man
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

जी-मैन टी-टावर के तहखाने में पंहुचता है।
DANGER
DO NOT ENTE
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

ये हुई न बात !
जैसा मैंने सोचा था. उन सभी को
कंट्रोल कर रहा है ये सुपरकम्प्यूटर.
इसी की मदद से उनकी संख्या बढ़ रही है.
G-man
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

शुरूआत कहां से करूं !
हां... यहां से.
जी-मैन नज़र आती हर चीज़ को तहस-नहस कर देता है.
टैरोलीन तुम्हारे लिए ये एक नया सरप्राइज़ होगा.
G-man
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

बहुत अच्छे जी-मैन. बताओ तुमने किया क्या?
पर अभी नहीं, ये जगह तो मुझे पागल ही बना देगी. यहां हमारे जैसे कई हैं.
हां! वहां तुम मुझ पर बैठे हो.
ये सारी बातें कॉफ़ी के टेबल पर होगी.
मुझे तो कॉफ़ी से कुछ बढ़कर चाहिए.
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

उम्मीद करता हूं कि आप लोगों को घर जाने की जल्दी नहीं होगी। मैं तुम्हें ये जगह घुमाऊंगा।
मुझे कोई जल्दी नहीं है
हां, वाकई तुम्हें कोई जल्दी नहीं है।
तुम कहना क्या चाहते हो?
हा, हा, कुछ नहीं। पर जी-मैन मेरी दुनिया को बचाने के अपने वादे को मत भूलना।
मैं कैसे भूलूंगा... पर शायद हम कॉफ़ी भूल गए हैं... एक कप कॉफ़ी प्लीज?

समाप्त
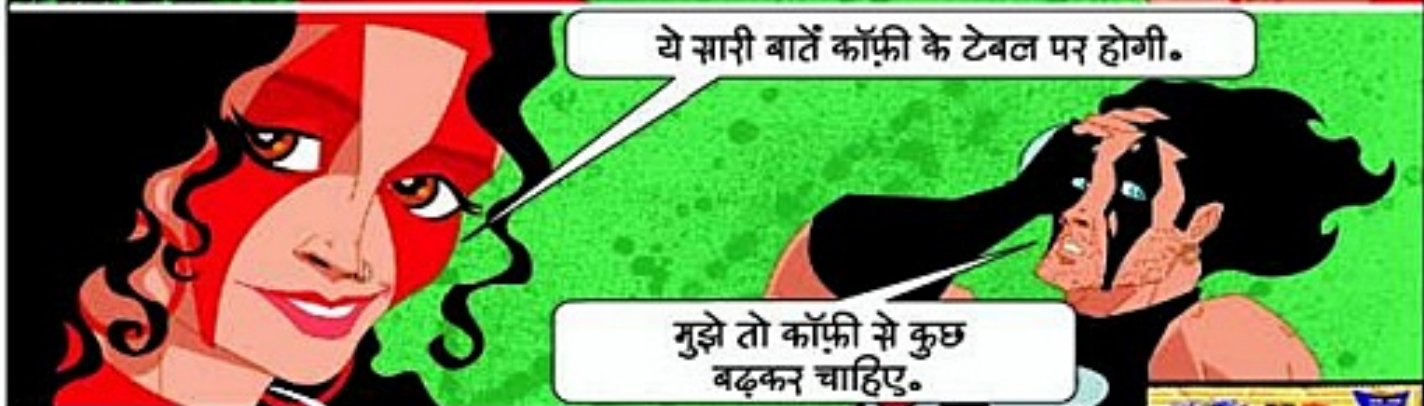
बलात् भीख

बुद्धवर नामक एक छोटे शहर में, नारायण नामक एक वाचाल भिखमंगा रहा करता था। जिन गलियों में वह भीख माँगता था, उनमें से एक गली में एक बड़ा सूदखोर रहता था। ऐसे तो नारायण को साधारण घरों में भीख मिल जाती थी, पर वह पर्याप्त नहीं होता था। सूदखोर से अच्छी रक़म मिलने की उसे उम्मीद थी।

परंतु, सूदखोर के भवन के सामने पहरेदार तैनात रहता था। नारायण चार क़दम आगे बढ़ाता तो बस, वह चले जाने के लिए चिल्लाने लगता था। मन ही मन उसने सोच लिया कि सूदखोर से कैसे मिलना है। जब पहरेदार किसी और से बातें करने में मशगूल था, उसने द्वार से होते हुए अंदर प्रवेश किया और चिल्लाने लगा, ''साहब सूदखोरजी।''

नारायण को अंदर आया देखकर और उसकी चिल्लाहटों को सुनकर व्यापारी के नौकरों ने उसे भगाने की कोशिश की। पर वह और जोर से चिल्लाने लगा। सूदखोर नीचे उतर आया और शोर गुल की वजह जानकर उसे पाँच रुपये देते हुए कहा, ''लगता है, तुम्हारी भीख बलात् भीख है। भीख माँगने का यह तरीक़ा नहीं है। अगर होहल्ला नहीं मचाते तो पाँच रुपयों के बदले दस रुपये देता।''

नारायण ने रुपये झोली में डाल लिये और सूदखोर से कहा, ''मालिक, अब तक आपके नौकरों ने जो मारपीट की, वही बहुत है। आपका पेशा तो ब्याज वसूल करना है। वह कैसे किया जाए, यह सलाह मैंने आपको नहीं दी। मैं पेशे से भिखमंगा हूँ। मैं कैसे भीख माँगू, इसपर कृपया मुझे सलाह मत दीजिये।'' कहता हुआ वह चला गया।

- क्रांतिकुमार

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

बेटे की सूझ-बूझ (जून'०५)

बेटे के पूछने पर उसने उत्तर दिया, "बेटा, मैं पिछली बार पाँच रुपये देकर गया था। इसलिए मैं सब को मना कर रहा था।" बेटा समझ गया कि उसके पिता बिना पैसे दिए शहर जाना चाहते हैं।

थोड़ी देर बाद उन्हें एक और गाड़ी दिखी। बेटे को एक तरकीब सूझी। उसने गाड़ी रोकी। वह अपने पिता से बोला, "पिताजी, मैं उसे जानता हूँ, वह हमें मुफ्त में शहर पहुँचा देगा परन्तु उसकी गाड़ी का पेट्रोल खत्म होने वाला है और उसे पच्चीस रुपये चाहिए, जिन्हें वह कुछ दिनों में लौटा देगा।" पिता ने पहले तो उसे पैसे देने से मना कर दिया, पर फिर उसे अपने बेटे के सामने हार माननी पड़ी और उसने पैसे दे दिए। बेटा बहुत खुश हुआ। दोनों आराम से गाड़ी में बैठकर शहर

पहुँचे। वहाँ जाकर उसने अपने पिता को सब कुछ सच-सच बता दिया। पहले तो उसके पिताजी बहुत नाराज़ हुए फिर वह अपने बेटे से बोले, "तुमने आज मेरी आँखें खोल दीं। आज से मैं कभी कंजूसी नहीं करूँगा।" यह सुनकर बेटा बहुत खुश हुआ। उस दिन के बाद वह गरीबों की मदद करने लगा और आराम से रहने लगा।

मिहिर गुप्ता, जलन्धर (पंजाब) -१४४ ००१.

दृष्टिकोण (जुलाई'०५)

बच्चे और माँ परमाशिवा के हाँथ में तोता देखकर चहक उठे।

पत्नी "बहुत सुन्दर है।"

परमाशिवा (उत्साहपूर्वक)- "केवल सुन्दर ही नहीं है। बात भी करता है।"

बच्चे व पत्नी (आश्चर्य से एक साथ)- "अच्छा?"

बच्चे- "तुम्हारा नाम क्या है ?"

तोता- "क्यों शक करते हो?"

बच्चे- "क्या खाओगे ?"

तोता- "क्यों शक करते हो ?" उनके बोलते ही तोता कुछ बोलता है इस पर बच्चे खुश हो गये पर परमाशिवा समझ गया कि उसे धोखा दिया गया है। उसने अपनी पत्नी को सारी बात बताकर तोता लौटाने की बात कही।

पत्नी-"लौटाने की जरूरत नहीं।" परमाशिवा- क्यों?

पत्नी- "सौ रुपये में आप तोता लाये हैं, कम्प्यूटर नहीं, जो कि आपके सारे सवालों का जवाब देदे। बेबुनियादी उम्मीद करना पहली गलती है। आपने उतावलापन दुकान पर दिखाया। एक सवाल पूछकर ही निर्णय ले बैठे- यह दूसरी गलती है आपकी। न तो पिंजरा कहीं से टूटा हुआ है। न तोता ही बीमार दिखता है। फिर क्या कमी बताकर इसे लौटायेंगे ? सस्ते दामों, महंगी चीज खरीदनी चाही- यह तीसरी गलती है। निर्णय लेने से पहले आगे पीछे सोचने की छूट है। संकल्प में विकल्प नहीं होता है। संशय करने वाला मनुष्य नष्ट हो जाता है। संशयात्मा विनश्यति गीता, कहती है - तोता भी तो बार-बार यही ऊँचा सिद्धांत सिखा रहा है। पत्नी की बात सुनकर परमाशिवा के ज्ञान के नेत्र खुल गये। तोता लौटाने की बात मन से निकाल दी। उसने महसूस किया कि दुनिया में ना तो कोई चीज अच्छी है और ना बुरी। दृष्टिकोण ही किसी चीज को अच्छा या बुरा बना देता है। ***कृष्णकुमार पाल, हरियाणा-१२३ ००१.***

सर्वश्रेष्ठ विजेता प्रविष्टि

''मन की दौड़'' (अगस्त '०५)

विदूषक की बात पर राजा ने कहाः ''हाँ विदूषक, तुम अपनी बात सिद्ध करके बताओ।''

विदूषक ने कहाः ''महाराज, मैं अभी थोड़ी देर पहले ही अपनी पत्नी से मिलकर दौड़ता हुआ चला आ रहा हूँ।'' सभा में सब हँसने लगे।

महाराज को गुस्सा आ गया कि यह तो मज़ाक पर मज़ाक कर रहा है, मेरी बात को भी हँसी में उड़ा रहा है। अब महाराज ने गुस्से से कहाः ''तुम्हारी पत्नी अभी कहाँ है, और तुम उससे मिल कर कहाँ से आ रहे हो, सही और पूरी बात बताओ। नहीं तो तुम्हें कारागार में डाल दूँगा। तुम सबके सामने बैठे हो, फिर दौड़ कर आने की बात कहाँ से आ गई।''
विदूषक अब गंभीर हो गया। उसने कहाः ''महाराज आदमी का मन, बहुत तेज दौड़ता है। वह बैठा यहाँ रहता है, लेकिन सोचता है, सैकड़ों, करोड़ों मील दूर की। मेरी पत्नी यहाँ से ३०० मील दूर गाँव गई है, लेकिन मैं सोचते हुए उससे मिल कर आ गया, यानी मैंने पहले उससे मिलने उसके पास जाने के लिए दौड़ लगाई, फिर वापसी के लिए वह भी कुछ ही क्षण में।''

विदूषक की बात पर राजा और सब लोग चकित रह गये। राजा विदूषक की बात से सहमत हो गया और उसे बहुत सारा इनाम दिया।

अवनि श्रीवास्तव, भोपाल-४६२ ०१६ (म.प्र.)

उचित निर्णय (सितम्बर २००५)

''निःसंदेह तला हुआ।'' गोपाल बोला।

''आप मसालेदार और तीखा पसंद करते हैं या फिर सादा और फीका?''

''सामान्यतः सादा और फीका किंतु अवसरवश मसालेदार एवं तीखा।'' गोपाल बोला।

गोपाल को लग रहा था, उस सामान्य लगने वाले व्यक्ति को उसके संबंधी व्यर्थ ही मानसिक रोग के अस्पताल में ले आये। तभी उसे अपने रोगी से मिलने की अनुमति मिल गई। लौटते समय उसे वही व्यक्ति मिला। उसने गोपाल को अपने साथ चलने का इशारा किया। वह गोपाल को एक कक्ष में ले गया, जहाँ एक मेज पर कुछ रखा हुआ था।

उस व्यक्ति ने उसे मेज पर रखी वस्तु को ग्रहण करने का संकेत किया। गोपाल ने आश्चर्यचकित होकर पूछा, ''यह क्या है?'' उत्तर सुनकर उसके होश उड़ गए। ''आपकी पसंद के मसालेदार और तीखे, तले हुए चमड़े के स्लिपर्स।''

गोपाल ने समझ लिया, उस व्यक्ति के संबंधियों का उसे मानसिक रोग के अस्पताल लाने का निर्णय उचित ही था।

सुरभि श्रीवास्तव, गोरखपुर (उ.प्र.)-२७३ ०१५.

महापुरुषों के जीवन की घटनाएँ

हार में जीत

ईसापूर्व ३२६ का वर्ष भारत के इतिहास में एक मोड़ का परिचायक था। यूनान में मकदूनिया के युवा, महत्त्वाकांक्षी और साहसी राजा सिकन्दर महान (ईसापूर्व ३५६ से ३२३ तक) ने भारत पर आक्रमण किया। वह बड़ी आसानी से भारत के प्रवेशद्वार से वापस खदेड़ दिया जाता केवल यदि तक्षशिला का राजा अंभी सुवांछित अतिथि के समान उसका स्वागत न करता। ऐसा नहीं कि अंभी को अपरिचित आगन्तुकों की मेहमानवाजी अच्छी लगती थी, बल्कि वह अपने पड़ोसी राजा पुरु को परास्त करना चाहता था, जो झेलम नदी के किनारे एक समृद्ध और शान्त राज्य पर शासन कर रहा था।

दुष्ट अंभी ने अन्य राजाओं को भी आक्रामक को सलाम करने के लिए अपने दरबार में निमंत्रित किया। कायर राजाओं ने उसके निमन्त्रण को स्वीकार कर लिया किन्तु आत्म-सम्मान और बहादुरी का प्रतीक पुरु अपवाद था।

उस काल में भारतीय राजा युद्ध में आक्रमण करने या अपनी रक्षा करने के लिए हाथियों का प्रयोग करते थे। यूनानियों को मालूम नहीं था कि इन विशाल अनुशासित पशुओं का सामना कैसे करें। राजा अंभी ने उन्हें हाथियों का मुकाबला करने की कला सिखा दी।

तब सिकन्दर झेलम की ओर बढ़ा और इसके किनारे पर रुक गया। झेलम पार करना उसके लिए आसान न था, क्योंकि जैसे ही उसकी सेना नाव पर बैठती थी कि पुरु की सेना उस पर आक्रमण कर देती। नदी के बी च में

यूनानी सेना के लिए अपनी रक्षा करना कठिन था। इसलिए सिकन्दर ने अपनी रणनीति बदल दी। वह वहाँ पर नदी पार करने का केवल बहाना करता रहा और अंभी की सहायता से कम पानीवाले मार्ग से अधिकांश को पैदल उस पार भेज दिया। पुरु इधर उसकी नावों को नष्ट करने में ही लगा रहा।

शत्रु की चालाकी से मात खाया पुरु ने अपनी बहादुर सेना के साथ सिकन्दरका सामना किया। पूरा दिन युद्ध होता रहा। यह एक बेमेल लड़ाई थी, क्योंकि सिकन्दर को अंभी की सेना का समर्थन प्राप्त था। पुरु के बीस हजार से भी अधिक सैनिक खेत आ गये। वास्तव में ऐसा भी समय आया जब बहादुर पुरु सूर्यास्त के समय अकेला ही शत्रु सेना से घिरा उन्हें गाजरमूली की तरह काट रहा था। किसी को उसे बन्दी बनाने का साहस नहीं था। सिकन्दर उसके साहस और संकल्प पर दाँतों तले उंगली दबाने लगा। अन्त में उसने अंभी को उसके पास आत्म समर्पण कर देने का सन्देश देकर भेजा। अंभी भय से काँपते हुए पुरु की ओर बढ़ा। "मेरी नजरों से दूर हो जाओ, कायर,धोखेबाज!" पुरु उस पर चीखा। अंभी डर से खिसक गया।

पुरु गंभीर रूप से घायल था। उसके शरीर और सिर पर के नौ चोटों से रक्त बह रहा था। फिर भी उसके पर चेहरे दुख का कोई चिह्न नहीं था।

सिकन्दर के कप्तानों ने उसे घेर कर बन्दी बना लिया और सिकन्दर के पास ले गये। उन्हें पूरा विश्वास था कि सिकन्दर इस अभागे बन्दी सिर काट लेगा, क्योंकि वह शत्रुओं को कभी माफ नहीं करता था। इसके अलावा, वह सनकी भी था। एक बार उसका एक मित्र बीमार पड़ गया था। चिकित्सकों ने उसे बर्फ के साथ शराब पीने और माँस खाने से मना किया था। लेकिन उसका बीमार मित्र पीता खाता रहा और मर गया। सिकन्दर ने सभी चिकित्सकों को मौत के घाट उतार दिया। उसने गाँव की पूरी आबादी को मौत की नींद इसलिए सुला दिया कि उनकी आत्माएँ मित्र की आत्मा का साथ दे सकें। उसकी निर्ममता के ये हैं कुछ दृष्टान्त!

हो चुका है और तुम असहाय हो, तुम्हारे साथ कैसा बर्ताव किया जाये?'' सिकन्दर ने पूछा।

''सिकन्दर, यदि तुम सचमुच एक राजा हो तो तुम्हें मालूम होना चाहिये कि दूसरे राजा के साथ कैसे बर्ताव किया जाता है!'' राजा पुरु ने उत्तर दिया।

''सचमुच, तुम्हारे साथ उसी सम्मान के साथ व्यवहार किया जायेगा जो एक राजा के योग्य है? क्या तुम्हें कुछ और चाहिये?'' उसके उत्तर से प्रभावित सिकन्दर ने एक बार और पूछा।

''नहीं, और कुछ नहीं, क्योंकि यदि मुझे तुम राजा का सम्मान दोगे तो मेरी जरूरत की हर चीज़ उसमें शामिल होगी।'' राजा पुरु ने कहा।

सिकन्दर ने फारस पर फतह करते समय कितने ही राजाओं का गर्व चूर-चूर कर दिया था, किन्तु उसने पुरु जैसा व्यक्ति नहीं देखा था जो उसके साथ द्वन्द्व युद्ध के लिए भी यदि सम्भव होता, तैयार मालूम पड़ता था। सिकन्दर अपने श्रेष्ठ कैदी के साहस और वीरता से प्रभावित हो गया। वह निस्सन्देह जानता था कि अंभी की दगाबाजी न होती तो वह युद्ध में कभी मुँहकी न खाता।

''अच्छा, राजा पुरु! अब जबकि युद्ध समाप्त

सिकन्दर को यह उत्तर बहुत पसन्द आया। उसने उसका राज्य वापस लौटा दिया।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि पुरु के असाधारण साहस, वीरता और आत्म-गौरव के भाव ने ही सिकन्दर को अभिभूत कर दिया था। मनुष्य के सद्गुणों का इतना प्रभाव पड़ता है कि शत्रु भी उसके प्रभाव से नहीं बच पाते।

राजा पुरु और सिकन्दर एक दूसरे के उदात्त व्यवहार से प्रसन्न थे। किन्तु बेचारा दुष्ट अंभी सन्तुष्ट न था। ***(एम.डी.)***

चन्दामामा प्रश्नावली-१

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

**सही उत्तर देनेवाले एक से अगर अधिक हों तो पुरस्कार की रक़म ड्रा द्वारा निकाले गये सही उत्तर देनेवाले पाँच लोगों में समान रूप से बाँटी जायेगी।*

इस अंक से पाठकों के लिए एक दिलचस्प प्रश्नावली प्रस्तुत करने का हमने निश्चय किया है। इस प्रश्नावली में जो भी प्रश्न पूछे गये हैं, वे सबके सब जनवरी व दिसंबर २००५ के बीच में चन्दामामा के अंकों में प्रकाशित कहानियों व शीर्षकों में से हैं। जिन्हें आप पढ़ चुके हैं ; वे यदि याद हों तो इन सबके उत्तर आप तुरंत बता सकेंगे। यदि याद नहीं हों तो बारहों अंकों को सामने रख लें और पन्ने पलटें तो उन्हें आसानी से जान जायेंगे। अवश्य ही बड़ा मज़ा आयेगा।

<u>आपको यह करना है:</u> १. उत्तर लिखिये, २. अपना नाम और उम्र (१६ वर्ष की उम्र के अंदर होना आवश्यक है); पिनकोड सहित सही पता हो, ३. अभिदाता हों तो वह संख्या लिखिये, ४. लिफ़ाफे पर **चन्दामामा प्रश्नावली-१** लिखें और उसे चन्दामामा के पूरे पते पर हमें भेजिये, ५. फरवरी महीने के अंत तक आपकी प्रविष्टि हमें मिल जानी चाहिये, ६. अप्रैल महीने के अंक में परिणाम प्रकाशित किये जायेंगे।

१. हमारे देश का वह सुप्रसिद्ध रेलवे स्टेशन कौन-सा है, जिसे विश्व विरासत का स्तर प्रदान किया गया?

२. "उल्लू को अंधेरा बहुत पसंद है। सुस्ती व अज्ञान से भरी ज़िन्दगी बिता रहे हो। तुम अंधकार नहीं, घने अंधकार हो। इसीलिए उल्लू ने तुम्हारा आश्रय लिया।" ये वाक्य किस कहानी से हैं?

३. हमारे देश में सुप्रसिद्ध स्मारक भवन का निर्माण ३५० साल पहले हुआ। वह कौन-सा है?

४. जूडो, कराटे, कुंगफू ने युद्धकला के आविर्भाव में सहायता पहुँचायी। ऐसी ही एक युद्धकला केरल प्रांत की है। वह कौन-सी है?

५. जिस घर में निवास करते हैं, उसे अपना मानकर, जिन मनुष्यों के बीच में रहते हैं, उन्हें अपना मानकर समर्पण भाव से प्रेरित हो परिश्रम करनेवालों की बातें ही अच्छा फल देती हैं- यह सत्य एक सुंदर पुष्प कहानी बताती है। क्या आप इस कहानी का शीर्षक बता सकते हैं?

६. यह चित्र किस कहानी का है?

याचना

प्राचीन काल में राजा ब्रह्मदत्त काशीनगर पर राज्य करते थे। उन दिनों बोधिसत्व ने एक गाँव के ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया। उसका नाम सोमदत्त था। सोमदत्त का बाप बड़ा ही गरीब था। वह अपने एक बीघे की जमीन में खेती-बाड़ी करके जैसे-तैसे अपने परिवार का भरण-पोषण कर लेता था।

सोमदत्त जब बड़ा हुआ, तब अपने पिता की कड़ी मेहनत को देख वह दुखी हो उठा। उसने अपने माता-पिता को सुखी रखना चाहा, इस वास्ते उसे एक उपाय सूझा। वह यह कि किसी तरह से विद्या सीखकर राज दरबार में नौकरी प्राप्त कर ले। वैसे इस हालत में भी वह अपने पिता को खेती बाड़ी में मदद दे सकता है, मगर एक बीघे जमीन में क्या पैदावार हो सकती है ? ये ही सारी बातें सोचकर सोमदत्त अपने पिता से बोला, ''बाबूजी, मैं तक्षशिला नगर में जाकर कोई विद्या सीखना चाहता हूँ।''

सोमदत्त के बाप ने उसे अनुमति दे दी।

सोमदत्त तक्षशिला गया। वहाँ पर एक गुरु की सेवा-शुश्रूषा करके विद्या सीख ली, तब अपने गाँव को लौट आया। पर उसका पिता अपने दो बैलों के साथ सुबह से लेकर शाम तक खेत में कड़ी मेहनत कर रहा है , इसे देख सोमदत्त ने सोचा कि अब पल पर भी देरी नहीं करनी चाहिए। वह दूसरे दिन ही काशी के लिए रवाना हुआ और राजा के दरबार में नौकरी प्राप्त कर ली।

इसके थोड़े दिन बाद सोमदत्त के पिता के दो बैलों में से एक मर गया। कई सालों से वह बैल उस परिवार का पोषण करता आ रहा था। अब उसे मरने पर सोमदत्त के बाप को लगा किउसका एक हाथ कट गया है।

उस हालत में उसने सोचा कि उसका बेटा राज दरबार में नौकरी करता है, राजा से सिफ़ारिश करके उसे एक बैल दिला देगा। इसी ख़्याल से

वह काशी जाकर अपने बेटे सोमदत्त से मिला।

सारी बातें सुनकर सोमदत्त अपने पिता से बोला, ''बाबूजी, आप और माँ, दोनों बूढ़े हो चुके हैं। अब उस थोड़ी-सी भूमि को लेकर क्यों मेहनत करते हैं? आप दोनों मेरे पास आकर आराम से अपने दिन बिताइये।''

पर सोमदत्त की बातें उसके पिता ने नहीं मानीं। वह हठ करते हुए बोला, ''मैं अपनी जन्मभूमि को छोड़कर नहीं आना चाहता। मेरी मौत वहीं पर होगी। तुम एक बैल दिला सकोगे तो मैं खेती-बाड़ी करते हुए मजे से अपने दिन काट सकता हूँ। वहाँ पर मुझे जो शांति मिलती है, वह यहाँ पर न मिलेगी!''

सोमदत्त कुछ ही दिन पहले राज दरबार की नौकरी में लगा था, इसलिए उसके पास एक बैल ख़रीदने लायक़ धन न था। साथ ही राजा से याचना करना भी उसे उचित न लगा। राजा अपने मन में यों सोच सकते हैं कि यह तो हाल ही में नौकरी में लगा, अभी से हाथ फैला रहा है। यों विचार कर सोमदत्त अपने बाप से बोला, ''बाबूजी, अगर मैं राजा से एक बैल की याचना करूँगा तो वे तुरंत पूछ बैठेंगे कि तुम्हें बैल से क्या मतलब? अलावा इसके नौकरी करने वालों के लिए याचना करना उचित नहीं है। आपसे तो ये सवाल नहीं कर सकते। इसलिए आप राजा के पास जाकर असली हालत बताइये और उनसे बिनती कीजिए कि वे आप को बैल दें। मैं समझता हूँ कि जरूर वे आप को एक बैल दे देंगे।''
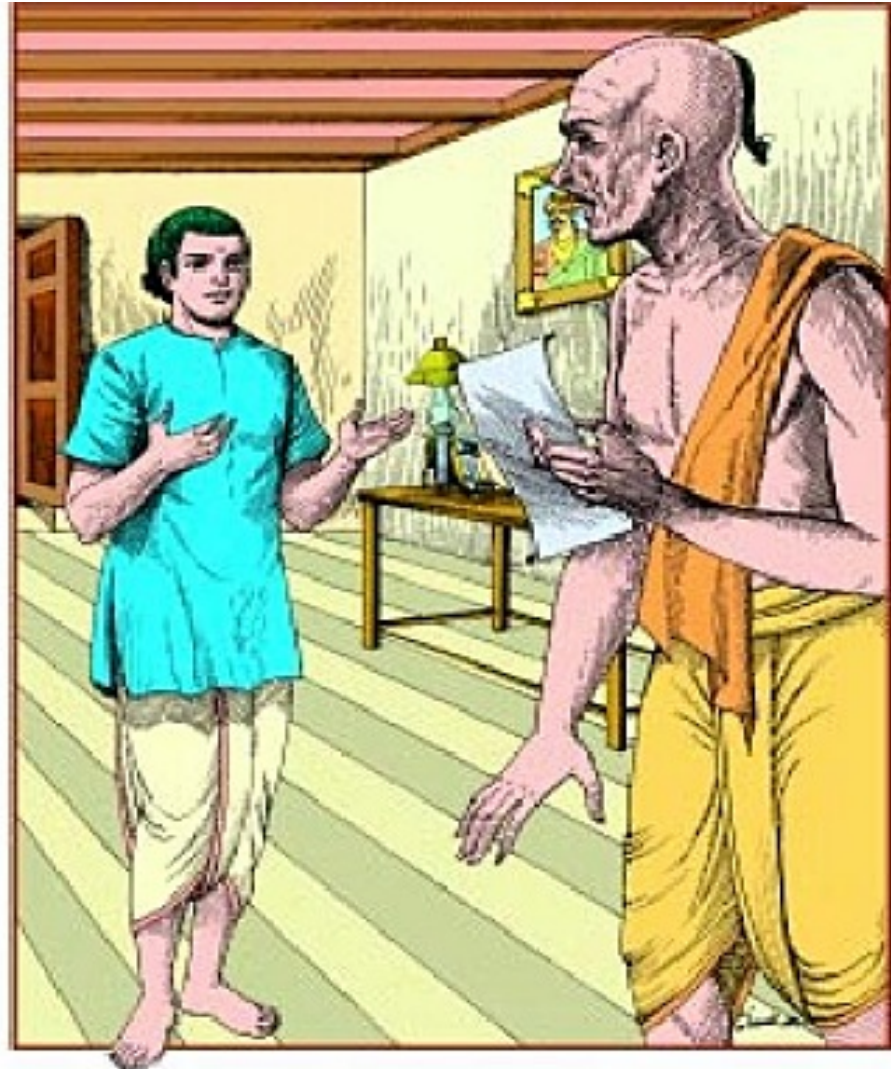
मगर सोमदत्त के पिता को ये बातें अच्छी न लगीं। उसने अपने बेटे पर जोर देते हुए कहा, ''बेटे, मैं एक देहाती हूँ। हल चलाना छोड़कर मैं कुछ नहीं जानता। कहाँ राजा? कहाँ दरबार? और कहाँ मैं? दरबार में क़दम रखने पर शायद मेरे मुँह से बोल न फूटे! राजा के साथ कैसे बात करनी है, उनके साथ कैसा बर्ताव करना है? ये सारी बातें मैं क्या जानूँ? नहीं; नहीं; किसी तरह तुम्हीं मेरा काम करवा दो।''

''तब तो मैं एक उपाय करता हूँ। मैं एक श्लोक लिखकर देता हूँ। दो-तीन दिनों में उसे अच्छी तरह से याद करके राज दरबार में जाकर सुनाइये। आपका काम बन जाएगा!'' यों सोमदत्त ने अपने बाप को हिम्मत बंधाई। इसके बाद

उसने एक श्लोक लिखकर अपने पिता के द्वारा कंठस्थ करवाया।

"द्वे में गोणा, महाराज,
ये हि खेत्तं कसाम से
तेसु एको मतोदेव,
द्वुतियं देहि खत्तिय।।

इसका मतलब है, "महाराज, मेरे पास दो बैल थे। मैं उनसे खेती-बाड़ी चलाता था। प्रभु, उनमें से एक मर गया, इसलिए मुझे दूसरा बैल दिलाइये।"

बूढ़े ने बड़ी मेहनत के साथ इस श्लोक को कंठस्थ कर लिया।

एक दिन सोमदत्त अपने पिता को दरबार में ले गया। अपने बेटे के समझाने के मुताबिक़ बूढ़ा राजा और मंत्रियों को प्रणाम करके, हाथ बांध कर विनयपूर्वक खड़ा हो गया।

"तुम कौन हो? क्या चाहते हो?" राजा ने पूछा। बूढ़े ने झट कंठस्थ किया हुआ श्लोक सुनाया। मगर उस घबड़ाहट में श्लोक थोड़ा बदल कर इस रूप में बूढ़े के मुँह से निकला-

द्वे में गोणा, महाराज,
येहि खेत्तं कसामसे;
तेसु एको मतोदेव,
दुतियं गण्ह खत्तिय।"

यह श्लोक सुनकर सारे दरबारी हँस पड़े। सोमदत्त ने लज्जा के मारे अपना सर झुका लिया, क्योंकि उसके बाप ने घबराकर, "मुझे दूसरा बैल दिलाइये" कहने के बदले यों कह दिया, "मेरे दूसरे बैल को ले लीजिए!"

राजा ने मुस्कुराते हुए पूछा, "तुम अपने बैल को देने के लिए इतनी दूर आये हो?"

"महाराज, चाहे तो आप उसे ले लीजिए, क्योंकि उसी की वजह से यह सारा बखेड़ा खड़ा हो गया है।" इन शब्दों के साथ बूढ़े ने राजा को सारा वृत्तांत सुनाया।

सोमदत्त के नीतिपूर्ण व्यवहार पर राजा बहुत खुश हुए, क्योंकि उनके दरबार के लोग छोटी-मोटी बात पर याचना करते रहते थे। मगर सोमदत्त ने ऐसा नहीं किया। इस पर राजा ने आठ जोड़े बैलों को सजवा कर उसके पिता को दान किया।

रामायण

वसिष्ठ मुनि के समझाने के बाद राजा दशरथ ने खुशी से विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण को भेज दिया। आगे आगे विश्वामित्र, उनके पीछे-पीछे राम लक्ष्मण जाने लगे। एक कोस की दूरी तक जाने के बाद वे प्रवाहित हो रही सरयू नदी के दक्षिणी तट पर पहुँचे।

''पुत्र राम, तुम शीघ्र ही नदी में आचमन करके आ जाओ। तुम्हें बल, अतिबल नामक दो विद्याएँ प्रदान करूँगा। मंत्रों से भरी ये विद्याएँ तुम्हें थकावट और किसी भी प्रकार के रोग तथा आपदा से बचायेंगी। तुम्हारे रूप-रंग में कोई परिवर्तन नहीं होगा। जब तक इन मंत्रों को जपते रहोगे, तब तक तुमसे बढ़कर कोई सुंदर, बुद्धिमान, कुशल, वाकपटु विश्वभर में कोई नहीं होगा।तुम्हें भूख नहीं लगेगी। तुम्हारी कीर्ति चारों दिशाओं में व्याप्त होगी।'' विश्वामित्र ने कहा।

राम ने आचमन पूरा किया और परिशुद्ध होकर लौटा। फिर विश्वामित्र ने बल व अतिबल विद्याएँ उसे प्रदान कीं। उस रात को उन सब ने सरयू तट पर विश्राम किया।

प्रातःकाल ही विश्वामित्र ने उन्हें जगाया और सरयू नदी में स्नान करवाया। अपने अनुष्ठानों को पूरा करने के बाद राम-लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ चल पड़े। वे उस स्थल पर पहुँचे, जहाँ सरयू नदी गंगा से मिलती है।

वहाँ एक आश्रम था। शिव जब यहाँ तपस्या में मग्न थे तब कामदेव उनकी तपस्या भंग करने आया। शिव ने क्रोधित होकर अपनी तीसरी आंख

खोली तो वह भस्म हो गया। तब से लेकर उस आश्रम में शिव के भक्त मुनिगण रहने लगे। कामदेव ने अपना अंग-यानी शरीर-यहा ँ खो दिया, इसलिए उस प्रांत का नाम पड़ा, अंगदेश।

राम लक्ष्मण ने विश्वामित्र से यह प्रसंग जाना। उस रात को वे वहीं ठहरे। दूसरे दिन एक नाव में यात्रा करके गंगा पार की।

फिर उन्होंने पैदल एक भयंकर अरण्य में प्रवेश किया। वहाँ उन्हें कोई मनुष्य दिखायी नहीं पड़ा। सिंहों, बाघों के गर्जन, जंगली-सूअरों की गुर्राहटें और हाथियों की चिंघाड़ें सुनायी देने लगीं। कहीं हिरनों के झुण्ड दिखाई पड़ते थे तो कहीं इधर-उधर भागते हुए खरगोश। कहीं जंगली भैंस मस्त होकर घूमते थे तो कहीं लंगूर पेड़ों पर कलाबाजियाँ करते थे। जहाँ देखो, वहाँ वृक्षों और झाड़ियों की भरमार थी, इसलिए मनुष्य का उनसे होते हुए जाना असंभव था।

उस घने अरण्य को देखते हुए चकित होकर राम ने विश्वामित्र से पूछा, ''महामुनि, इस भयंकर अरण्य का क्या नाम है?''

विश्वामित्र ने उस अरण्य की कहानी सविस्तार यों बतायी: इस प्रांत में बहुत पहले मलदम, करूशम नामक दो महान देश हुआ करते थे। ताटका नामक यक्षिणी और उसका पुत्र मारीच उन दोनों देशों का सर्वनाश करने लगे। भयभीत जनता वहाँ से भाग गयी। ताटका कोई सामान्य यक्षिणी नहीं थी। वह हज़ार हाथियों के समान बल रखती थी। उसने शस्य श्यामल देशों को महारण्यों में बदल दिया।

राम ने पूछा, ''गुरुवर, कहते हैं कि यक्षों की शक्ति अल्प होती है। यक्षिणी ताटका को इतना बल कहाँ से आया, कैसे मिला?''

''पुत्र, ताटका का वृत्तांत भी मुझसे सुनो। सुकेत नामक एक बड़ा यक्ष रहा करता था। संतान प्राप्त करने के लिए उसने घोर तपस्या की। ब्रह्मा उसकी तपस्या पर प्रसन्न हुए, परंतु उन्होंने पुत्र के जन्म का वरदान न देकर एक ऐसी पुत्री के जन्म का वरदान दिया, जो हज़ार हाथियों के समान बल रखती हो। ब्रह्मा के वरदान के प्रभाव के फलस्वरूप ताटका जन्मी।''

''वह जब सयानी हुई, बड़ी ही सुंदर थी। पिता सुकेत ने उसका विवाह सुंद नामक, यक्ष कुमार से रचाया। कुछ समय बाद उनके एक पुत्र हुआ,

जिसका नाम मारीच था। वह पराक्रम में इंद्र की बराबरी का था और बहुत ही अहंकारी था।

"उस दौरान एक घटना घटी। उसी प्रांत में तपस्या करनेवाले अगस्त्य ने ताटका के पति सुंद को मार डाला। ताटका और मारीच ने इसका प्रतिकार लेने की ठानी। ज़ोर से चिल्लाते हुए वे दोनों तपस्वी अगस्त्य पर टूट पड़े। तब अगस्त्य ने दोनों को राक्षस बन जाने का शाप दिया। मारीच राक्षस बन गया। ताटका ने अपना पूरा सौंदर्य खो दिया और भयंकर आकार की बन गई। वह नरभक्षिणी के रूप में परिवर्तित हो गयी। ताटका अगस्त्य का तो कुछ बिगाड नहीं सकी किन्तु वह उस पुण्य भूमि को जहाँ कभी अगस्त्य रहा करते थे, तहस-नहस करने लगी और अब भी कर रही है। राम, तुम्हें उस ताटका का वध करना होगा। उसे स्त्री समझकर संकोच मत करना। उसकी दुष्टता का कोई अंत नहीं। इसे मारने से तुम्हें थोड़ा भी पाप नहीं लगेगा।" विश्वामित्र ने बताया।

राम ने हाथ जोड़कर कहा, "महामुनि, हमारे पिताश्री ने हमें आदेश दिया है कि आप जो भी कहें, उसका हम पालन करें। आपकी आज्ञा के अनुसार ताटका को अवश्य मार डालूँगा।"

इसके बाद राम ने धनुष की प्रत्यंचा खींची और खन्खन् की ध्वनि की।

वह ध्वनि सुनते ही ताटका के बन के सब निवासी चौंक उठे। ताटका क्रोधित हो उठी और उस तरफ़ तेज़ी से दौड़ी-दौड़ी आयी, जिस तरफ
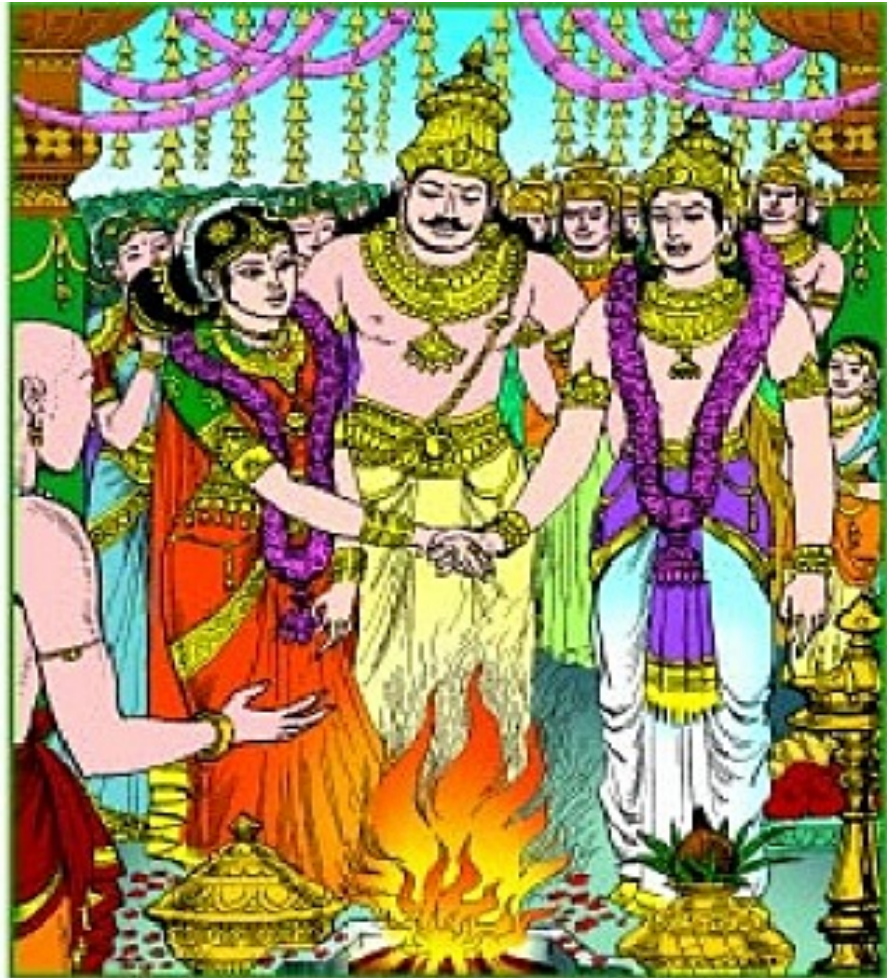
से यह ध्वनि आ रही थी। अपनी तरफ़ बढ़ी चली आ रही ताटका को देखकर राम ने लक्ष्मण से कहा, "देखा लक्ष्मण, कितनी विकृत लग रही है, पराक्रमी भी डर जायेंगे। इस स्त्री को मारने की मेरी इच्छा नहीं हो रही है। पास आने दो, नाक, कान काट डालेंगे और इसका गर्व चूर-चूर करके भेजेंगे।"

उनकी बातें सुनकर ताटका और क्रोधित हो उठी। उग्र होकर हाथ उठा कर राम लक्ष्मण को धूल से ढकती हुई उनपर पत्थर बरसाने लगी। राम ने बाण चलाकर उसके दोनों हाथ काट डाले। लक्ष्मण ने आगे बढ़कर उसके नाक-कान काट डाले। फिर भी ताटका उनके ऊपर पत्थर बरसाती रही।

तब विश्वामित्र ने कहा, "राम, इस पापिन

पर दया क्यों दिखा रहे हो। यह जीवित रही तो कुछ भी करने से संकोच नहीं करेगी। संध्या काल के पहले ही इसे मार डालो। प्रातःकाल व सायंकाल राक्षसों में अधिकाधिक बल होता है। उस समय उन्हें मार डालना कठिन काम है।''

राम ने तुरंत एक बाण चलाया, जो सीधे ताटका की छाती में जा लगा। वह नीचे गिर गयी और छटपटाती हुई मर गयी।

विश्वामित्र बहुत ही प्रसन्न हुए। उन्होंने राम का आलिंगन करते हुए कहा, ''पुत्र, इस दुष्ट स्त्री को मारकर तुमने बहुत बड़ा काम किया। इस रात को हम यहीं ठहरेंगे और सुबह अपनाआश्रम जाएँगे।''

सबेरे ही विश्वामित्र ने स्नान किया। फिर शुद्ध होकर पूरब की ओर मुख करके बैठ गये और राम को अपने सामने बिठा कर अनेक अस्त्रों से संबंधित मंत्रों का उपदेश देते हुए जप किया। वे सारे के सारे अस्त्र अपने-अपने रूपों में प्रकट हुए और हाथ जोड़कर कहने लगे, ''हम आपके भृत्य हैं। आप जो काम सौंपेंगे, करेंगे।'' तब राम ने उन अस्त्रों को अपने हाथों से छूते हुए कहा, ''अब तुम सब मेरे मन में बस जाओ।''

इसके बाद राम ने अस्त्र-शस्त्रों के उपसंहार के मंत्र भी सीखे। इसके बाद तीनों वहाँ से निकल पड़े।

थोडी दूर जाने के बाद एक पर्वत के बगल में एक सुंदर वन उन्हें दिखायी पड़ा। राम ने पूछा, ''स्वामी, इस कानन को देखते हुए मुझे असीम

हर्ष हो रहा है। यह आश्रम जैसा लगता है। क्या इसकी भी कोई कहानी है?'' विश्वामित्र ने उसकी कहानी यों बतायीः

''पुत्र, बहुत पहले की बात है। विरोचन का पुत्र बलि महा पराक्रमी था। तीनों लोकों पर उसने विजय पायी और स्वर्गलोक पर आक्रमण करने ही वाला था। स्वर्ग के देवता भयभीत होकर विष्णु के पास गये। विष्णु ने उन्हें रक्षा का वचन दिया और कश्यप के पुत्र वामन बनकर जन्मे। बलि से किये जानेवाले महायाग पर वामन स्वयं गये। उसने उनका सत्कार किया। बलि के गुरु शुक्राचार्य ने बलि को सावधान करते हुए कहा कि ''वामन ब्राह्मण स्वयं विष्णु हैं और तुम्हारा सर्वनाश करने आये हैं। इसलिए इनकी बात पर ध्यान न देना।'' वामन ने बलि से तीन डग का स्थल माँगा। शुक्राचार्य के मना करने और सावधान करने पर भी बलि ने उन्हें दान देने का संकल्प कर लिया, क्योंकि बलि स्वयं विष्णु का परम भक्त था। वामन ने तीनों डग गिने और तीनों लोकों पर छाकर बलि को अधोलोक में भेज दिया। उस वामन ने और उसके पिता ने भी इसी आश्रम में दीर्घ काल तक तपस्या की थी। अतः मैंने भी अपना आश्रम यहीं बना लिया। लेकिन बारंबार आकर राक्षस मुझे बहुत तंग कर रहे हैं। नाना विधियों से वे याग को भंग कर देते हैं। धर्म-पुण्य करनेवालों को मार देते हैं। उनकी फसलों को उजाड़ देते हैं। जन-कल्याण के हित उन्हें वध करने के लिए ही मैं तुम लोगों को यहाँ लाया हूँ। तुमलोगों के अतिरिक्त इस कार्य को अन्य कोई नहीं कर सकता।''

''इस कार्य से तुम्हारी कीर्ति भी चारों दिशाओं में फैल जायेगी।''

विश्वामित्र के आश्रम का नाम सिद्धाश्रम था। राम लक्ष्मण सहित जब विश्वामित्र ने आश्रम में प्रवेश किया तब वहाँ रहनेवाले सब मुनि दौड़ते हुए आये, विश्वामित्र की पूजा की और राम लक्ष्मण का स्वागत-सत्कार किया। थोड़ी देर तक विश्राम करने के बाद वे दोनों विश्वामित्र के पास आये और उन्हें प्रणाम करते हुए कहा, ''महामुनि, अब आप यज्ञ की तैयारियाँ कीजिये। आपके यज्ञ की हम रक्षा करेंगे।''

वह रात बीत गयी। राम लक्ष्मण अनुष्ठानों की पूर्ति कर चुकने के बाद विश्वामित्र के पास आये। तब तक विश्वामित्र होम के सम्मुख आसीन थे।

विश्वामित्र को प्रणाम करके उन्होंने कहा, ''महात्मा, राक्षस कब आयेंगे? हमें किस समय उनकी प्रतीक्षा करनी होगी?''

विश्वामित्र ने कोई उत्तर नहीं दिया। पर, यज्ञ वेदिका के चारों ओर बैठे हुए मुनियों ने उनसे कहा, ''पुत्रो, विश्वामित्र याग दीक्षा में हैं, अतः उन्हें मौन रहना होगा। आज से लेकर छे दिनों तक आपको हमारी रक्षा करनी होगी।''

बाण लिये, रातों में सोये बिना दोनों ने पाँच दिनों व रातों तक आश्रम की रक्षा की। छठवाँ दिन आया।

यज्ञशाला में अग्नि देदीप्यमान जल रही थी। मंत्रों के उच्चारण के साथ याग चल रहा था। उस समय आकाश घोर ध्वनियों से प्रतिध्वनित हो उठा। सुबाहू, मारीच अपने साथी राक्षसों को लेकर काले मेघों की तरह आकाश पर छा गये और यज्ञ वेदिका पर रक्त की वर्षा करने लगे।

राम ने सिर उठाकर आकाश की ओर देखा। उसने मानवास्त्र डोरी पर चढ़ाया और मारीच पर बाण चलाया। वह समुद्र में जाकर गिरा। इसके बात राम ने आग्नेय अस्त्र से सुबाहू को और वायु अस्त्र से शेष राक्षसों को मार डाला। विश्वामित्र का याग पूर्ण हुआ। उन्होंने राम से कहा, ''पुत्र, तुमने मेरा महान उपकार किया।'' फिर उन्होंने उसकी प्रशंसा की।

तावीज की महिमा

एक दिन सवेरे एक नगर में एक मोटा-ताजा आदमी आ पहुँचा। वह स्थूलकाय व्यक्ति एक काला वस्त्र अपने शरीर पर लपेटे हुए था। उसे देख बच्चे डर कर भाग गये। औरतों ने घर के किवाड़ बंद कर लिये।

वह मुश्किल से अपने शरीर को चलाते चिल्लाने लगा, ''तावीज की महिमा जानना चाहते हो, तो जल्दी आ जाओ।'' लोगों ने उसे जादूगर समझ कर समीप जाने की हिम्मत नहीं की।

मगर माधव नामक एक व्यक्ति को तावीज की महिमा जानने की इच्छा हुई। उसने स्थूलकाय के निकट पहुँचकर पूछा, ''भाई, मुझे तावीज की महिमा दिखाओ तो।''

स्थूलकाय ने माधव को एड़ी से चोटी तक देखा और कहा, ''चलो, मेरे साथ।''वह स्थूलकाय माधव को शहर के बाहर ले गया। उसने अपनी कमर से बंधे तावीज को खोल दिया। तब उतनी बड़ी कमर से बंधा तावीज एक साधारण आदमी की कमर से बंधने लायक़ छोटा हो गया।

''क्या यही तावीज की महिमा है?'' माधव ने सकपकाकर कहा।

''अरे, अभी तुमने इसकी महिमा कहाँ देखी! मैं इसे तुम्हारी कमर से बांधकर चला जाता हूँ। मैं तुम्हारी आँखों से जब ओझल हो जाऊँगा, तभी तुम्हें इसकी महिमा मालूम हो जाएगी। यदि तुम इससे अपना पिंड छुड़ाना चाहते हो तो इसे किसी दूसरे की कमर पर बांध देना होगा।'' इन शब्दों के साथ स्थूलकाय व्यक्ति ने माधव की कमर पर तावीज बांध दिया और वहाँ से जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ा कर आँखों से ओझल हो गया।

उसके ओझल हो जाने के बाद माधव ने जब अपने शरीर पर नज़र डाली तब उसे लगा कि वह बेहोश होता जा रहा है, क्योंकि माधव स्थूलकाय हो चुका था।

२५-वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

माधव उसी दिशा में दौड़ पड़ा जिस ओर वह व्यक्ति गया था। गली का नुक्कड़ पार करते ही उसे एक पतला आदमी काला वस्त्र ओढ़े जाते हुए दिखाई दिया। माधव को तावीज की महिमा मालूम हो गई थी।

गाँववाले बोले, ''हमने पहले ही सोचा था कि इसमें कोई दगा है! उस क़मबख़्त तावीज को तोड़कर फेंक दो।''

उन लोगों की सलाह पाकर माधव ने तावीज को खोल कर दूर फेंक दिया। मगर दूसरे ही क्षण तावीज आकर माधव की कमर में चिपक गया। साथ ही वह अंगारों की तरह अब जलने भी लगा। माधव ने उसे खोलने का प्रयत्न जब बंद किया, तभी वह ठण्डा हो गया।

अब माधव के सामने बड़ी समस्या पैदा हो गई थी। महीने भर का इकट्ठा अनाज दो दिन के लिए भी पर्याप्त न हुआ। अपने पास जो कुछ था, उसे खाने की चीज़ें ख़रीदने के लिए बेच दिया। उसे लगा कि अब मरने के सिवाय कोई दूसरा रास्ता नहीं है। वह गाँव के बाहर जा मौत का इंतज़ार करने लगा।

दुपहर के वक़्त पड़ोसी गाँव से आनेवाला एक दुबला-पतला व्यक्ति बरगद के नीचे आराम करने आया। माधव के भारी-भरकम शरीर को देख बोला, ''महाशय, मेरा नाम शंकर है। क्या शरीर को मोटा-ताज़ा बनाने के लिए तुम कोई उपाय जानते हो? मेरे कंकाल शरीर को देख कर कोई अपनी लड़की देने को तैयार नहीं होता।''

ये बातें सुन माधव उत्साह में आकर बोला, ''यह सब तावीज की महिमा है!''

माधव ने अपनी भुजा से तावीज को ख़ोल दिया और शंकर की भुजा में बांधते हुए समझाया, ''तुम्हारी आँखों से मेरे ओझल हो जाने के बाद ही तुम्हें इसकी महिमा मालूम हो जाएगी। यदि तुम इस तावीज से पिंड छुड़ाना चाहोगे तो तुम्हें इसे किसी दूसरे की कमर में बांध देना होगा। तुम इसे निकालकर मत फेंको। नहीं तो यह तुमको जला देगा।'' यों समझाकर वह चला गया।

उसके बाद शंकर ने अपने शरीर की ओर देखा तो उसका सिर चकरा गया। उसका शरीर बहुत भारी हो गया था। इसके बाद वह अपने गाँव पहुँचा, लेकिन उसके भारी शरीर को देख किसी ने अपनी लड़की नहीं दी। उसके सामने

खाने की समस्या पैदा हो गई। उसने गेरुए वस्त्र पहन लिए, वह दर-दर घूमते भीख माँगकर अपने दिन काटने लगा।

एक दिन शंकर ने किसी के घर जाकर दरवाज़ा खटखटाया। उस घर में एक ब्रह्मचारिणी रहती थी। वह देखने में बदसूरत थी, इसलिए उसकी शादी न हो पाई थी। उसने किवाड़ खोलकर गेरुए वस्त्र पहने खड़े हुए शंकर को देख पूछा, "स्वामी, क्या सुंदर दीखने के लिए कोई उपाय है?"

उस औरत की बातें सुनते ही शंकर का दिमाग तेज़ी के साथ काम करने लगा। उसने कहा, "क्यों नहीं? तावीज है।"

"तब तो वह तावीज मुझे देने की कृपा कीजिए।" ब्रह्मचारिणी ने कहा।

शंकर ने झट तावीज खोल कर ब्रह्मचारिणी की कमर में बांधते हुए कहा, "मेरे चले जाने के बाद ही तुम्हें इस तावीज की महिमा का पता चलेगा। अगर इससे पिंड छुड़ाना चाहते हो तो तुम्हें इसे किसी दूसरे की कमर में बांधना होगा। इसके सिवाय कोई दूसरा उपाय नहीं है।" यों कहकर वह वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

ब्रह्मचारिणी बड़ी प्रसन्नता के साथ घर के भीतर गई और अपने सौंदर्य को देखने के लिए आदम कद के आइने के सामने जा खड़ी हुई। अपने रूप को देखते ही वह चौंक पड़ी, क्योंकि उस आइने में उसके शरीर का एकचौथाई हिस्सा भी दिखाई न देता था। वह फ़र्श पर गिरकर लेटते शाम तक रोती रही।

अगल-बगल के लोगों ने आकर उसे देखा। उनमें युवरानी की परिचारिका भी थी। ब्रह्मचारिणी को देखते ही वह ठठाकर हँस पड़ी और बोली, "युवरानी के हँसे चार साल हो गये हैं। तुम्हें देखने पर वह ज़रूर हँसेंगी।" इसके बाद वह परिचारिका ब्रह्मचारिणी को युवरानी के पास ले गई।

युवरानी एक टीले पर चिंता मग्न बैठी हुई थी। भूत की जैसे लगनेवाली ब्रह्मचारिणी को नखरे के साथ चलते देख वह खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"इतने सालों बाद तुम मुझे हँसा सकी। तुम में कौन-सी महिमा है?" युवरानी ने ब्रह्मचारिणी से पूछा।

"यह महिमा मेरी नहीं, तावीज की है।" ब्रह्मचारिणी ने जवाब दिया।

"जरा दिखाओ तो वह तावीज! फिर तुम्हें लौटा देती हूँ।'' युवरानी ने पूछा।

"इसे अपनी कमर में बांधकर देखिए, तब पता चलेगा।'' इन शब्दों के साथ ब्रह्मचारिणी ने अपना तावीज निकालकर युवरानी की कमर में बांध दिया और कहा, "जब आप किसी दूसरे की कमर में इसे बांध देंगी, तभी आप इससे पिंड छुड़ा सकती हैं।'' यों कहकर वह जल्दी-जल्दी अपने घर चली गई।

ब्रह्मचारिणी के जाते ही युवरानी पालकी पर बैठकर राजमहल की ओर चल पड़ी। थोड़ी दूर जाने पर कहारों को लगा कि पालकी भारी होती जा रही है। उसी वक़्त पालकी पर बैठी युवरानी ज़ोर से चिल्ला उठी। इस घबराहट में कहारों ने पालकी को नीचे गिरा दिया। पालकी टूट गई। टूटी हुई पालकी में से युवरानी भूत की जैसी उठ खड़ी हुई। परिचारिकाएँ बड़ी मुश्किल से उसे चलाते अंतःपुर में ले गईं। अपने पिता को देखते ही युवरानी दहाड़ें मारकर रो पड़ी और उसने सारा समाचार उसे कह सुनाया।

राजा ने गुस्से में तावीज को खोल दूर फेंक दिया। लेकिन दूसरे ही क्षण तावीजआकर युवरानी की कमर से चिपक गया और वह अगारों की भांति उसके शरीर को जलाने लगा। उसकी पीड़ा को देख राजा को दया आ गई और राजा ने ख़ुद उस तावीज को पहन लिया। युवरानी पहले की तरह पतली बन गई, मगर राजा स्थूलकाय हो गया।

दूसरे दिन राजा ने ब्रह्मचारिणी को बुला भेजा। उसके द्वारा यह पता लगाया कि किसने उसे तावीज दिया है। तब शंकर के द्वारा उसने माधव का भी पता लगाया, मगर माधव को तावीज देनेवाले का पता राजा न लगा सका। आख़िर राजा ने घोषणा की कि जो आदमी इस तावीज को बंधवा लेगा, उसके खाने-पीने, कपड़े वग़ैरह का प्रबंध किया जाएगा।

तब एक आदमी तावीज बंधवाने को आगे आया। वह आदमी वही था जिसने माधव के कमर पर तावीज बांध दिया था। वह फिर से स्थूलकाय बन गया और आराम से राजमहल में खाते-पीते युवरानी का मनोरंजन करने लगा।

अपराजेय गरुड़ - २
चित्रः गाँधी अय्या
1
चन्द्रपुरी के राजा महेन्द्रदेव घोषणा करते हैं कि पूर्व प्रधान मंत्री का पुत्र आदित्य उसका उत्तराधिकारी होगा। उनकी यह भी इच्छा है कि आदित्य उनकी दत्तक पुत्री अरुणा से विवाह करे।
यह सब तब होता है जब वह सर्पदेश से विजयी होकर लौटता है, जहाँ तांत्रिक नागबन्धु जल कर भस्म हो जाता है और उसका गुफा-मन्दिर नष्ट हो जाता है। दो शैतानी दुष्टकर्मी, ओरेकल तथा रवीन्द्रदेव बन्दी बना लिये जाते हैं। सेना पति नरेन्द्रदेव, का जो चाहता था कि उसका बेटा रवीन्द्रदेव राजा का उत्तराधिकारी बने, अपने बेटे को बचाते समय मगरमच्छों द्वारा अंग भंग कर दिया जाता है और दोनों पैरों से वह अपंग हो जाता है।
चन्द्रपुरी में शान्ति लौट आती है। फिर भी, बहुत लोग इस बात से अनजान हैं कि कुछ ताकतें फिर अराजकता फैलाने के लिए सिर उठाने लगी हैं। षड्यन्त्र के खलनायक कौन हैं? क्या आदित्य, जिसके वंश के इष्टदेव गरुड़ हैं, एक बार फिर अपने को अपराजेय सिद्ध कर पायेगा? अनुगामी वृतान्तों में यह उद्घाटित किया जायेगा।

ओरेकल को इस शर्त्त पर छोड़ दिया जाता है कि वह चन्द्रपुरी में कभी दुबारा प्रवेश नहीं करेगा।
रवीन्द्रदेव क्षमा के लिए प्रार्थना करता है।
मुझ पर दया करें, महाराज।
राजा रवीन्द्रदेव को फटकारता है।
तुम देशद्रोह के अपराधी हो, रवीन्द्रदेव। तुम मेरे भतीजे हो, इसलिए क्षमा कर रहा हूँ, किन्तु चन्द्रपुरी से निकाल तुम्हें दिया जायेगा।
रवीन्द्रदेव को ले जाकर राज्य की सीमा पर छोड़ दिया जाता है।
हे! क्या तुम मुझे मुक्त किये बिना जा रहे हो?
रवीन्द्रदेव हिल-डुल सकने में असमर्थ है।
क्या कोई मेरी मदद करेगा?
मैं आ गया हूँ, रवीन्द्रदेव!
रवीन्द्रदेव ओरेकल को पहचान लेता है...
मैं अपनी शक्ति से तुम्हारी गतिविधि पर नजर रखे हुए था, रवीन्द्र, लेकिन मैं छिप गया था ताकि सैनिक देख न लें।
क्या किस्मत है! क्या तुम मेरी जंजीर को हटा सकते हो?
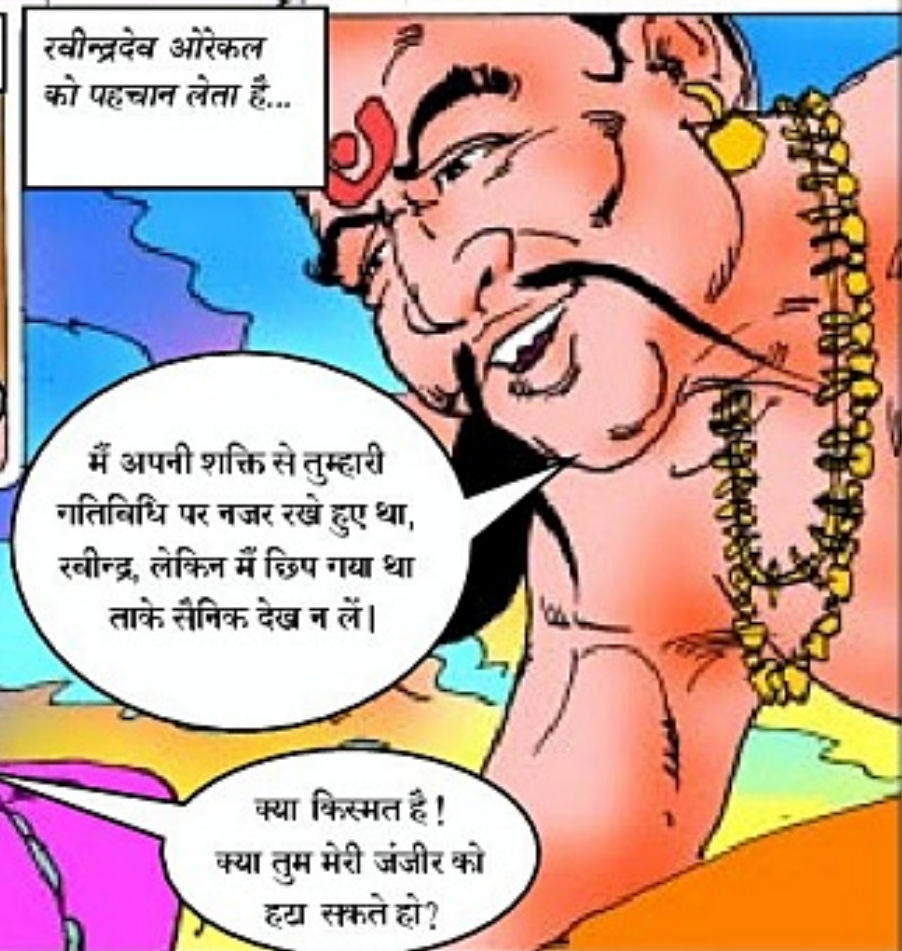
मैं तुम्हें अपने आदिवासी दोस्तों के पास ले चलूँगा। वे तुम्हारी मदद कर सकेंगे।
रवीन्द्रदेव को आदिवासियों की बस्ती में ले जाया जाता है। उसे गधे की सवारी की बदनामी झेलनी पड़ती है।
महोदय, नागबन्धु की आत्मा ने ही आप की रक्षा की होगी।
रवीन्द्रदेव को जंजीर से मुक्त कर दिया जाता है।
ओह! कितना आराम मिला।
रवीन्द्रदेव को पीने के लिए कुछ दिया जाता है।
मेरे पिता कैसे हैं? क्या जानते हो वे कहाँ हैं?
वे जीवित हैं, लेकिन चल नहीं सकते।
सर्पदेश के निकट पहुँचते समय उनकी नाव डूब गई। तभी मगरमच्छों के आक्रमण से उनके पाँव नष्ट हो गये।
मैं उनसे तुरन्त मिलना चाहता हूँ, जहाँ भी हों!
वे पहाड़ी गुफा में हैं। आप को वहाँ पहुँचा दिया जायेगा।
दो आदिवासी ओरेकल और रवीन्द्रदेव को मार्ग बताते हैं।
यह मार्ग खतरनाक है, लेकिन आदिवासी उन्हें किसी तरह भोजन पहुँचा देते हैं।

आदित्य 'कम्यून' के कुछ लोगों से मिल रहा है। महल का एक सैनिक प्रवेश करता है।
महाराज, एक आदिवासी दम्पति मिलना चाहते हैं।
उन्हें अन्दर ले आओ।
तुम सब जा सकते हो। हमलोग फिर मिलेंगे।
आदित्य आदिवासी दम्पति को पहचान लेता है। उसने आदमी को यज्ञ कुण्ड से बचाया था।
आशा है, तुम्हें कोई समस्या नहीं होगी।
नहीं महाराज, हमारी बस्ती में सब ठीक-ठाक चल रहा है।
महाराज, हम जल्दी में आप को कुछ सूचना देने आये हैं।
महाराज, कुछ लोग आप का राज्याभिषेक भंग करना चाहते हैं।
वे कौन हैं?
दुख है कि वे हमारे अपने ही आदिवासी हैं। कोई ओरेकल नाम का उन्हें भड़का रहा है।
हमलोगों ने उसे सेनापति के बेटे के साथ देखा है।
उन्हें एक गुफा में ले जाया गया, जहाँ बिना पैर का एक आदमी रहता है।
रवीन्द्रदेव और उसका पिता! एक पुनर्मिलन?
क्रमशः

नृत्य और संगीत का समय

दो उत्सव- एक उत्तर में और दूसरा दक्षिण में- फरवरी में आरम्भ होकर मार्च में समाप्त होते हैं। वे हैं मध्य प्रदेश में खजुराहो उत्सव और आन्ध्र प्रदेश में दक्कन उत्सव! कभी बुन्देलखण्ड पर नियंत्रण के साथ खजुराहो शक्तिशाली चन्देला वंश की धार्मिक राजधानी था। वहाँ केमन्दिरों को पश्चिमी, पूर्वी तथा दक्षिणी समूहों में वर्गीकृत किया गया है। हजार साल से भी पहले निर्मित, वे मन्दिर पत्थर की मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध हैं, जो मुख्य रूप से राजपूत शासकों के, जो संगीत और नृत्य के भी संरक्षक थे, जीवन, मनोभाव तथा धार्मिक विश्वास को प्रतिबिम्बित करते हैं। एक सप्ताह तक चलनेवाला, भव्य रूप से आलोकित मन्दिरों के अपूर्व पृष्ठपट में आयोजित, खजुराहो नृत्य उत्सव, भिन्न-भिन्न शास्त्रीय नृत्य शैलियों, जैसे- कत्थक, मणिपुर, ओडिसी, कुचिपुडी, भारत नाट्यम, तथा कथकली- की विशिष्टताओं को दर्शाता है। इस उत्सव में भाग लेने के लिए विविध शैलियों के सर्वश्रेष्ठ प्रतिपादक आते हैं। नृत्यों का प्रदर्शन चित्रगुप्त मन्दिर, जिसके आराध्य देव सूर्य हैं, तथा शिव के विश्वनाथ मन्दिर के सामने खुले मंच पर किया जाता है। इस अवसर पर हस्तशिल्पकार अपने-अपने क्षेत्र की विशिष्ट हस्त कलाओं का भी प्रदर्शन करते हैं। यह उत्सव खजुराहो की सांस्कृतिक परम्परा का समारोह है जिसका उद्देश्य होता है भावी पीढ़ियों के लिए इसे सुरक्षित रखना।

पाँच दिनों तक चलने वाला, हैदराबाद में आयोजित दक्कन उत्सव दक्कन की संस्कृति, इसकी कला और हस्तशिल्प, संगीत और नृत्य को दर्शाता है। विशेष कार्यक्रमों में होते हैं ग़ज़ल, कौव्वाली तथा मुशायरे, जो शहर की अपनी विशेषताएँ हैं और जिन्हें देखकर मुस्लिम शासकों के शान्तिपूर्ण दिनों की याद ताजी हो जाती है। हैदराबाद, क्योंकि अपने मोतियों और कांच भी चूड़ियों के लिए मशहूर है, कोई भी उत्सव स्थानीय कलाओं और हस्तकलाओं की प्रदर्शिनी के बिना पूरा नहीं हो सकता। यहाँ का आहार मेला हैदराबाद के खास नवाबी खाने के लिए लोगों विशेष आकर्षण का केन्द्र होता है। दक्कन उत्सव पूर्ण रूप से आन्ध्र प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित किया जाता है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

आदिम ''स्पाइनी बैक''

डायनोसॉर्स अब नहीं रहे लेकिन टुआटारा का अस्तित्व अब भी है। वे केवल न्यू ज़ीलैंड में पाये जाते हैं। माओरी भाषा में उसके नाम का अर्थ है ''स्पाइनी बैक''। टुआटाराज डायनोसॉर्स के समकालीन हैं और शायद यह एक मात्र जाति है जो २२० मिलियन वर्षों से अभी तक बिना बदलाव के कायम रही है। टुआटारा रेंगनेवाला प्राणी है। लेकिन छिपकली और मगरमच्छ के साथ इसकी ज्यादा समानता नहीं है। इसके विपरीत, इसकी शारीरिक बनावट पुरानी है। उसका चमड़ा ढीला और पपड़ीदार होता है। उसके शरीर के बदलते तापमान से अत्यधिक ठण्डी जलवायु में जीवित रहने में सहायता मिलती है।

टुआटारा निशाचारी प्राणी है। यह बिल में रहता है और रात में शिकार करता है।

मादा टुआटारा अण्डे देकर उन्हें त्याग देती है अण्डों से बारह महीनों के बाद अण्डे के दाँत से छिलकों को तोड़ कर बच्चे बाहर निकलते हैं और अपनी देखभाल स्वयं करते हैं। मादा टुआटारा दो, तीन या चार वर्षों में एक बार अण्डा देती है।

तुम्हारा प्रतिवेश

सूखे बादल खतरा के सूचक

बादलों से भरे आसमान को देख कर अब ऐसा न समझें कि बारिश जरूर होगी। इज़रायल के वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि प्रदूषण वास्तव में सूखे बादलों का निर्माण कर वर्षा को गिरने से रोक सकता है। जब गर्म हवा घनीभूत होकर पानी की बून्दों में बदल जाती है तब वे बून्दें बसों, कारखानों तथा प्रदूषक माध्यमों से निकलते धुओं के द्वारा बने कणों के सागर में डूब जाती हैं। वे कण संख्या में इतनी अधिक होती हैं कि वे वर्षा की छोटी बून्दों को निगल जाती हैं और इस प्रकार सूखे बादलों का निर्माण कर उन्हें वर्षा के रूप में गिरने से रोक देती हैं।

इज़रायली वैज्ञानिकों ने इन सूखे बादलों का फोटोग्राफ लिया है। चित्रों से पता चला है कि इनमें पानी की बून्दों का आकार साफ बादलों की बून्दों से आधा होता है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

बिल्ली–पात

ऊँचाई से किसी मनुष्य को गिरते हुए देख कर चिन्ता से लोगों की साँसें रुक जाती हैं। बिल्ली को भी गिरते हुए देख कर वैसी ही हालत होती है।

फिर भी, चिन्ता के कारण बिलकुल अलग-अलग हैं। पहले मामले में लोग चोट की मात्रा के बारे में चिन्तित होते हैं। दूसरे मामले में लोग इस बात का इन्तजार करते हैं कि क्या बिल्ली अपने पाँवों पर उनकी आशा के अनुरूप शालीनता से गिरी है कि नहीं।

गिरती हुई बिल्ली हमेशा अपने पाँवों पर पत्तन करती है और चोट खाने से बच जाती है। कारण सरल है। बिल्ली में संवेदिक प्रणाली असाधारण होती है। वह अवपात के बारे में सावधान कर देती है।

अपने भारत को जानो

इस महीने की प्रश्नोत्तरी देश के समाचार पत्रों के बारे में है

१. भारत में प्रकाशित वह कौन-सा प्रथम भारतीय भाषा का समाचार पत्र है जो अभी तक चल रहा है। किस भाषा में यह प्रकाशित हुआ और इसे कब आरम्भ किया गया?

२. भारत में प्रकाशित सबसे पहला समाचार पत्र कौन-सा था? इसका सम्पादक कौन था?

३. 'द *हिन्दू*' नाम का अंग्रेजी समाचार पत्र कब स्थापित किया गया? इसके संस्थापक कौन थे?

४. भारत का प्रथम दैनिक समाचार पत्र कौन-साथा?

५. किस राज्य में उसके अपने क्षेत्र से कोई समाचार पत्र प्रकाशित नहीं होता?

(उत्तर ७० पृष्ठ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो,
जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

DHARM NATH PRASAD

DHARM NATH PRASAD

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

मधुसूदन कुमार सूद
ब्लॉक न. १३/२ए, सेक्टर-२,
डी.आई.ज़ेड एरिया,
गोल मार्केट, नई दिल्ली-११० ००१

विजयी प्रविष्टि

ग्राहकों को इन्तजार है
ग्राहकों का इन्तजार है

"अपने भारत को जानो" प्रश्नोत्तरी के उत्तर :

१. बम्बई समाचार-गुजराती-१८२२
२. कलकत्ता जनरल ऐडवाइज़र -१७८०-जेम्स ऑगस्टस हि के। बाद में बंगाल गज़ट के नाम से जाना गया।
३. १८७८-कस्तूरी रंगा अय्यंगार तथा उनका पुत्र के.श्रीनिवासन।
४. बम्बई हेरल्ड-१७८९
५. अरुणाचल प्रदेश।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor: B. Viswanatha Reddi (Viswam)

ऊर्जा का अक्षय स्रोत

बीना अपने माता-पिता के साथ तीर्थयात्रा पर तिरुपति जाती है। कुछ देर तक क्यू में प्रतीक्षा के बाद भगवान के दर्शन का मौका मिल जाता है। वे प्रसन्न और सन्तुष्ट हो बाहर आते हैं। उन्हें भूख लग जाती है। वे देवस्थानम की भोजन शाला में खाने के लिए जाते हैं, जहाँ निशुल्क भोजन दिया जाता है। हजारों तीर्थयात्रियों को गर्म-गर्म भोजन खाते देख बीना दंग रह जाती है। यह कैसे सम्भव होसकता है, वह आश्चर्य करती है। वह अपने चाचा की ओर मुड़ती है, जो इस मन्दिर के नगर में अक्सर आते रहते हैं। चाचा मोहन सहज रूप से कहते हैं, ''हमें सूर्य के प्रति कृतज्ञ होना चाहिये।'' ''अंकल, प्लीज समझा कर कहिये,'' बीना कहती है। बाद में, अपने कॉटेज में पैदल जाते समय अंकल मोहन बताते हैं, ''यह सौर ऊर्जा है, जो सूरज लगभग बिना मूल्य का हमें देता है। क्या तुमने सौर बैटरी का चित्र नहीं देखा?'' अंकल मोहन पूछते हैं। ''स्टीम कूकर्स को बिजली देने के लिए, जिसमें भोजन बनता है, आवश्यकतानुसार ऊर्जा सैकड़ों सौर बैटरियों से आती है जो छत पर रखे पैनल्स पर लगी होती हैं।''

बीना एक सवाल पूछती है, ''अंकल, क्या सौर ऊर्जा से भोजन पकाना महंगा नहीं पड़ता, यद्यपि सौर ऊर्जा हमें बिना मूल्य मिलती है?''

अंकल मोहन का उत्तर तैयार है: ''बीना, बाद में, विकसित टेक्नोलॉजी की मदद से सौर ऊर्जा बिजली अथवा गैस की अपेक्षा बहुत सस्ती पड़ेगी। याद रखो, सौर ऊर्जा अक्षय है और यह प्रदूषण से मुक्त है।''

''काश, अपने घरों में भी हम सौर ऊर्जा का इस्तेमाल कर पाते।'' बीना कहती है।

''निस्सन्देह, हम कर सकते हैं। मैं इसके बारे में फिर कभी बताऊँगा'', अंकल मोहन कहते हैं।